

THE PERSON OF CHRIST IN THE
GOSPEL AND THE QUR'AN

इंजील व कुरआन में
शख्शयित मसीह



फेहरिस्त मजामीन

1- इस्लाम में मसीह की हैसियत.....	6
2- मसीह की सिफ़ात मुमय्यज़ा	8
अलिफ़ - उनका अजीब व गरीब और लामिसाल हमल	9
ब - मसीह की अजीब व गरीब विलादत	10
ज - मसीह का खुदा की तरफ़ से मुबारक होना.....	11
द - मसीह को रूहुल-कुदुस की मदद हासिल थी	12
ह - मसीह की वफ़ात के वक़्त उनका सऊद	13
व - मसीह की रिसालत व सीरत की इस्मत.....	14
ज़ - मसीह की लासानी रिसालत के निशानात	15
ह - मसीह का इल्म-ए-ग़ैब.....	15
त - मसीह का अल्लाह से तकर्रुब और शफ़ी होना	15
3- क़ुरआन में मसीह के मोअजिज़े	17
अलिफ़ - ख़ल्क करने की कुद़रत.....	17
ब - ब-वक़्त विलादत आपका गुफ़्तगु करना	17
ज - मुर्दे जिंदा करना, जन्म के अँधों को बीनाई अता करना और कोढ़ियों को शिफ़ा देना.....	18
द - ग़ैब का इल्म	20
ह - आस्मान से दस्तर-ख़वान उतारना	20
4 - क़ुरआन में मसीह की इब्नियत.....	21
अलिफ़ - पहला नज़रिया कुफ़्र का है.....	22
ब - दूसरा नज़रिया ख़ालिक को मख़्लूक से मिला देने का नज़रिया है	22
ज - बेटा तो नर व मादा से मिलकर ही बज़रीये विलादत पैदा होता है.....	23

द - चौथा नज़रिया है कि मसीह खाता था	25
ह - पांचवां नज़रिया मख्लूक का नफ़ा व नुक़सान पहुंचाने.....	26
5 - इस्लाम में मसीह की उलूहियत.....	27
अलिफ़ - पहली आयत	28
ब - दूसरी आयत.....	29
ज - तीसरी आयत	29
द - चौथी आयत	30
ह - पांचवीं आयत.....	31
6- इस्लाम में मसीह की इन्सानियत.....	32
अलिफ़ - मसीह अब्द (बंदा) हैं, रब नहीं	32
ब - मसीह मिस्ले आदम हैं.....	34
7 - किताब-ए-मुक़द्दस (बाइबिल में मसीह).....	36
अलिफ़ - मसीह की उलूहियत	36
ब - खुदा की अबुव्वत	36
ज - मसीह के बयान	37
द - रसूलों की गवाही.....	40
ह - अम्बिया की गवाही.....	40
8 - मसीह की उलूहियत और इंसानियत	43
अलिफ़ - मसीह में सिर्फ़ कामिल उलूहियत थी.....	44
ब - मसीह सिर्फ़ इंसान थे.....	45
ज - मसीह की शख़्सियत में उलूहियत और इंसानियत की यगानगत	45
(1) नबुव्वतों पर मबनी सबूत	46
(2) मसीह के अक़्वाल पर मबनी सबूत.....	47

अलिफ़ - आपका अज़ली वजूद	47
ब - आपका आस्मान से आना	48
ज - आपकी तमाम जगहों और तमाम ज़मानों में मौजूदगी.....	49
द - आपका ग़ैर-महदूद इख़्तियार.....	49

(3) मसीह के अलक्राबात और इलाही अफ़आल पर मबनी सबूत

49

अलिफ़ - आप का ख़ालिक होना	49
ब - आपका मुर्दों को ज़िंदा कर देना	50
ज - आप मुंसिफ़ आलिम होंगे	50
द - आप लायक़ परस्तिश हैं.....	51
ह - आप गाफ़िर-उल-ज़ुनुब हैं (गुनाह बख़्शते हैं).....	51
व - आप हयात-ए-अबदी बख़्शते हैं.....	51
ज़ - आप बाप के मुसावी (बराबर) हैं.....	52
ह - आपने सुजूद व तअब्बुद (इबादत) कुबूल किया	52

(4) मसीह के शागिर्दों की गवाही पर मबनी सबूत.....

52

अलिफ़ - तोमा की गवाही.....	53
ब - यूहन्ना की गवाही	53
ज - पौलुस की गवाही.....	53

9 - अक्रीदा तस्लीस-फ़ील-तौहीद

53

10 - वहदानियत-ए-अक़ानीम

60

अलिफ़ - अक़ानीम की उल्हियत.....	60
ब - रबूबियत अक़ानीम	60
ज - अज़लियत-ए-अक़ानीम	61

द - अक़ानीम की हमाजाई	62
ह - सज्दा का इस्तिहकाक	62
व - सिफ़ते हक़	63
ज़ - सिफ़ते मुहब्बत	63
ह - कुद्दुसियत	64
10 - एतराज़ात	64
अलिफ़ - मसीह की उल्हियत पर एतराज़	64
ब - रूह-उल-कुद्दुस की उल्हियत पर एतराज़	66
ज़ - तस्लीस-फ़ील-तौहीद के अक़ीदे पर एतराज़	67
सवालात	71

1- इस्लाम में मसीह की हैसियत

सय्यदना मसीह का इस्मे-गिरामी और आप की सिफ़ात व तालीमात का कोई ना कोई पहलू कुरआन में करीबन तिरान्वें (93) मर्तबा आयात में मज़कूर हुआ है। ये तादाद कम नहीं है, इसी से आपकी एहमीय्यत वाज़ेह है। चुनान्चे इस्लाम में जब कभी भी हज़रत मसीह के बारे में कुछ गौर व फ़िक्र करना होता है तो इन्ही आयात को बुनियाद बनाया जाता है।

बारहा ये भी देखा गया है कि मुस्लिम मुफक्करोँ और मुफस्सिरोँ ने बाइबल मुकद्दस की आयतों को इन कुरआनी आयात की तफ़सीर के लिए माख़ज़ और बुनियाद बनाया है। ताहम उन्हों ने बाइबिल मुकद्दस में से वही इबारतें तस्लीम की हैं जो मुसल्लम खयालात से मेल खाती हैं और ऐसी सारी कोशिशों को ठुकरा देते हैं जिनसे किसी तरह का कुरआन और इन्जील के दर्मियान तताबुक़ दिखाया जा सकता है, और इस की बड़ी वजह सिवा इस के और कोई नहीं है कि दोनों किताबों में वारिद बयानात और बुनियादी अक्काइद में फ़र्क़ पाया जाता है।

अब चूँकि ऐसे लोगों की दिलचस्पी सिर्फ़ इस मुआमले में रहती है कि सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ के बयान की ही सेहत पर भरोसा किया जाये और बाकी दीगर माख़ज़ को रद्द कर दिया जाये। लिहाज़ा इन्जील की तहरीफ़ का शोशा हर उस मौक़े पर तैयार रहता है जब किताब-ए-मुकद्दस का मतन कुरआनी मतन से टकराता है।

मैं इस मज़मून में कुरआनी फ़िक्र को उस के तद्रीजी इतिहास में दिखाने की कोशिश करूँगा कि जब वो मसीही तालीमात की मुखालिफ़त करती है।

इस इब्तिदाई मरहले पर इतना बताता चलूँ कि जो भी कुरआन के मतन को समझने कोशिश करेगा, उसे ये बात ज़रूर नज़र आएगी कि मक्का में नाज़िल होने वाली आयतों में मसीह की ताज़ीम और मसीहिय्यत, मसीह के शागिर्दों, मसीही उलमा और राहिबों का पास व लिहाज़ मिलता है।

लेकिन नबी इस्लाम के मदीना के आखिरी अय्याम में कुरआनी आयात काफ़ी सख्त होती गई और मसीहियों के ख़िलाफ़ मुखालिफ़त उभरती चली गई। हता कि मसीह की

उल्हियत का तो कतई रद्द और खुल्लम खुल्ला इन्कार नज़र आता है। सबब यहां भी महज़ अक्रीदा ही है क्योंकि आँहज़रत ने ये देखा कि तस्लीस-फील-तौहीद का अक्रीदा और वहदानियत का अक्रीदा बाहम टकराता है।

नीज़ ये कि तौहीद की मुनादी और वहदानियत की दावत देना ही इस्लाम का मिशन था। कई कुरआनी आयात में अक्रीदा सालूस के इस मौजू पर नुक्ता-चीनी की है, हत्ता कि कई आयतों में नसारा यानी अरब के मसीहियों पर शिर्क का इल्ज़ाम भी लगाया है।

शायद आँहज़रत को इस सालूस वाले अक्रीदे ने परेशान कर दिया था जो बिद्अती नसारा से माखूज था और बिद्अती सर-ज़मीन अरब में हर तरफ़ फैले हुए थे, ये तस्लीस मुरक्कब थी अल्लाह से, उस की साहिबा मर्यम से और उन के बेटे ईसा से।

याद रहे सच्चे मसीहियों ने ऐसे अक्रीदे का कभी भी इज़हार नहीं किया और ना माना है। लेकिन मुसलमानों ने इस से एक बड़ा तनाज़ा खड़ा कर दिया और उसे ऐसे पकड़े हुए हैं कि छोड़ने का नाम नहीं लेते, हालाँकि मसीहियों ने मौक़ा ब मौक़ा हमेशा वज़ाहत की कोशिश की है।

साथ ही साथ एक और भी मसअला है जिसकी जड़ बड़ी गहिरी है और उस की बुनियाद एक आयत-ए-कुरआनिया है :-

“और (वो वक़्त भी याद करो) जब मर्यम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी-इसाईल मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हूँ (और) जो (किताब) मुझसे पहले आ चुकी है (यानी) तौरात उस की तस्दीक करता हूँ और एक पैगम्बर जो मेरे बाद आएँगे जिनका नाम अहमद होगा उन की बशारत सुनाता हूँ। (फिर) जब वो उन लोगों के पास खुली निशानीयां लेकर आए तो कहने लगे कि ये तो सरीह जादू है।□ (सूरह अल-सफ़ 61:6)

अबू जाफ़र अल-तिबरी से रिवायत है कि उस ने मुआवीया बिन सालिह से सुना और उस ने सईद बिन सुवेद से सुना और उस ने अल-आअला बिन हलाल अल-सलमी से सुना और उस ने अरबाज़ बिन सारिया से सुना, “मैंने रसूल-अल्लाह को कहते सुना “अल्लाह के नज़्दीक मैं खातिम-उन्नबीय्यीन मकतूब व मुकर्रर हूँ उस वक़्त से कि आदम सनी हुई मिट्टी की शक़ल में थे। और मैं तुमको पहले ये भी बता दूँ कि मैं अपने बाप इब्राहिम की दुआ हूँ, और मैं ईसा की बशारत हूँ, अपनी वालिदा की रोया हूँ, और जैसा कि अम्बिया

की माँ ने रोया देखी वैसी ही रोया मेरी माँ ने उस वक़्त देखी जब उन्होंने ने मुझे जन्म दिया और वो ये थी कि एक नूर उन में से ऐसा निकला जिससे शाम के महलात रोशन हो गए।

मुस्लिम हज़रात इस हदीस के बयान को लफ़्ज़ी तौर पर लेते हैं और जब देखते हैं कि इन्जील जनाब मुहम्मद के बारे में किसी तरह की निशानदेही नहीं करती और ना ही मसीह ने कोई इस बारे में बात की है तो फ़ौरन कह देते हैं कि इन्जील मुहरिफ़ है।

फिर एक तीसरी मुश्किल है जिसे मसीहियों ने माना है यानी मसीह का दुख व आलाम उठा कर सलीब पर चढ़ाया जाना, जो कि बुनियादी मसीही अक़ीदा है और इन्जील मुक़द्दस की तालीम पर मबनी है। इस वाक़िया सलीब की कुरआन ने नफ़ी की है क्योंकि ये यहूदियों के बारे में कहता है :-

“और ये कहने के सबब कि हमने मर्यम के बेटे ईसा मसीह को जो खुदा के पैग़म्बर (कहलाते) थे क़त्ल कर दिया है (खुदा ने उन को मलऊन कर दिया) और उन्होंने ने ईसा को क़त्ल नहीं किया और ना उन्हें सलीब पर चढ़ाया बल्कि उन को उन की सी सूरत मालूम हुई। और जो लोग उन के बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वो उन के हाल से शक में पड़े हुए हैं। और पैरवी ज़न (गुमान) के सिवा उन को उस का मुतलक़ इल्म नहीं। और उन्होंने ने ईसा को यकीनन क़त्ल नहीं किया। बल्कि खुदा ने उन को अपनी तरफ़ उठा लिया। और खुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (सूरह अल-निसा 4:157-158)

चौथी दिक्कत मसीहियों का अक़ीदा “इब्ने-अल्लाह” है जिसे कुरआन ने रद्द किया है। इस मौजू पर हम आगे चल कर ग़ौर करेंगे और फुक़हा व उलमा की आरा (राए) और तअल्लिकात भी तब ही पेश कर देंगे।

2- मसीह की सिफ़ात मुमय्यज़ा

बुनियादी मसीही अक़ाइद की मुखालिफ़त के बावजूद कुरआन ने मसीह की आला सिफ़ात व करामात का एतराफ़ किया है जो उन्हें बशरियत की सतह से ऊपर दर्जा देते हैं। ये मुम्ताज़ औसाफ़ आपकी ज़िंदगी, किरदार, पैग़ाम और शख़्सियत में जाहिर हुए। जब हम इन औसाफ़ का मुवाज़ना कुरआन में मज़कूर दीगर अम्बिया और रसूलों से करते हैं

तो हमें आगाही होती है कि ये तो ऐसे हैं कि किसी नबी को भी नहीं दिए गए, हता कि जनाब मुहम्मद को भी नहीं।

अलिफ़ - उनका अजीब व गरीब और लामिसाल हमल

हम कुरआन में पढ़ते हैं :-

“और इमरान की बेटी मर्यम की जिन्होंने ने अपनी शर्मगाह को महफूज़ रखा। तो हमने उस में अपनी रूह फूंक दी और वो अपने परवरदिगार के कलाम और उस की किताबों को बरहक समझती थीं और फ़रमांबदरों में से थीं।” (सूरह अल-तहरीम 66:12, और सूरह अल-अम्बिया 21:91)

अल-फ़ख़्र अल-राज़ी कहते हैं कि “فخنا فيه من روحنا” का मतलब है हम (अल्लाह) ने ईसा में अपनी रूह में से फूँका क्योंकि ईसा मर्यम के शिकम में थे। किस ने फूंक मारी इस मुआमले में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ है, किसी ने “من روحنا” की बुनियाद पर ये कहा कि फूँकने वाला अल्लाह था। एक गिरोह का कहना ये है कि “نافح” (फूँकने वाला) जिब्रील थे क्योंकि उन के नज़्दीक हज़रत जिब्रील के क़ौल “لاحب لك غلاماً ركباً” (कि तुम्हें पाकीज़ा लड़का बख़्शूँ) से यही ज़ाहिर है।

मुफ़स्सिरों में इस नफ़ख़ (نفخ) की कैफ़ीयत में इख़्तिलाफ़ है, और चार किस्म की आरा (राय) हैं :-

(1) वहब का कहना ये है कि जिब्रील ने मर्यम के गिरेबान में फूंक मारी तो वो मर्यम के रहम (पेट) तक जा पहुंची।

(2) एक राय ये है कि दामन में फूँका तो रहम (पेट) में वो हामिला हुई।

(3) अल-सदी का कहना ये है कि आसतीन को पकड़ कर दरअ (درع) के पहलू में फूँका तो ये फूंक सीने तक जा पहुंची तो वो हामिला हो गई। तब उन की बहन यानी ज़करीया की बीवी उन के पास आई और उन्हें ये मालूम हो गया कि हामिला है तो पूछा, तब मर्यम ने सारा माजरा कह सुनाया। इस पर ज़करीया की बीवी बोल उठी “जो मेरे पेट

में है” (हजरत यहया) उसे मैं उस को जो तेरे पेट में है (ईसा) सज्दा करते हुए महसूस करती हैं। अल-सदी कहते हैं यही “مصدقاً بكلمة من الله” का मतलब है।

(4) नफ़ख (فخ) मर्यम के मुँह में फूँका गया था जो शिकम व रहम (पेट) तक जा पहुंचा तो वो हामिला हो गई।

इब्ने अब्बास से मर्वी है कि “जिब्रील ने अपनी उंगलियों से कपड़ा हटाया और उस में फूँक दिया। और कहा “अहसनत” (احصنت) का मतलब है कि मर्यम ने अपनी इफ़त व आबरू की खूब हिफ़ाज़त की थी और “महसिन [محسنة] का मतलब है अफ़ीफ़ा (عفيفة) यानी पाक दामन, [و نفخنا فيه] में “रूहना” (روحنا) में “फीहा” (فيه) से मुराद “فيه فرح ثوبها” है यानी चाक-ए-गिरेबाँ में हमने फूँक मारी। फिर ये भी राय दी है कि इस में हम (अल्लाह) ने वो चीज़ पैदा की जो उस (रहम मर्यम) में ज़ाहिर हुई।

मुक़ातिल ने अल्फ़ाज़ “و صدقت بكلمات ربه” की तफ़सीर करते हुए कहा है, “यानी ईसा पर” जिसकी किरआत भी ताईद करती है जिसमें “كلمات ربه” के बजाय “كَلِمَاتِ رَبِّهَا” है और ईसा के लिए कलिमतुल्लाह (كلمة الله) तो कुरआन में कई जगह आया है।

ब - मसीह की अजीब व ग़रीब विलादत

कुरआन में उस गुफ़्तगु का ज़िक्र मिलता है जो हजरत मर्यम और ख़ुदा के फ़रिश्ते के दर्मियान हुई जब वो मसीह की विलादत की ख़ुशख़बरी देने के लिए आ मौजूद हुआ।

“उन्हों (जिब्रील) ने कहा मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ (यानी फ़रिश्ता) हूँ (और इसलिए आया हूँ) कि तुम्हें पाकीज़ा लड़का बख़्शूँ। मर्यम ने कहा कि मेरे हाँ लड़का क्योँकर होगा मुझे किसी बशर (इंसान) ने छुवा तक नहीं और मैं बदकार भी नहीं हूँ। (फ़रिश्ते ने) कहा कि यूँही (होगा) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया कि ये मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीक़ पर पैदा करूँगा) ता कि उस को लोगों के लिए अपनी तरफ़ से निशानी और (ज़रीया) रहमत (व मेहरबानी) बनाऊँ और ये काम मुकरर हो चुका है। (सूरह मर्यम 19:19-21)

अल-बेजावी ने येसू की मोअजजाणा पैदाईश पर तफ्सीर करते हुए ये लिखा “इस इम्तियाज़ ने मसीह को दूसरे बनी-नूअ इंसान से और सारे नबियों से मुम्ताज़ कर दिया है क्योंकि वो बगैर किसी इंसानी रिश्ते और मेल-जोल के पैदा हुए थे।”

लेकिन अल-फ़ख़र अल-राज़ी ने इस मौज़ू पर ये राय ज़ाहिर की है :-

(1) अल्फ़ाज़ “لَا هَبَ لَكَ غُلَامًا زَكِيًّا” के बारे में उस ने कहा “पाकीज़ा” के तीन मतलब हैं पहला, यानी वो गुनाह के बगैर है दूसरा, वो तज़किया में बढ़ते गए जैसे वो शख्स जो बेगुनाह हो उस के हक़ में ये लफ़ज़ बोला जाता है और वो आला किस्म की खेती की पैदावार जो हर तरह से पाक हो और लहला रही हो उसे ज़की (زكى) कहा जाता है। तीसरा, वो मलामत से बाला पाक थे।

(2) “وَلَنَجْعَلَنَّ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً” का मतलब है कि उस की पैदाईश तमाम बनी-नूअ इंसान के लिए एक निशान है क्योंकि बगैर वालिद के पैदा हुए। “رَحْمَةً مِنَّا” का मतलब ये है कि तमाम बनी-नूअ इंसान उन से बरकत हासिल करेंगे, नीज़ ये कि मसीह के सिदक़ के दलाईल और ज़्यादा वाज़ेह हो जाएंगे और आपके अक्वाल और आपकी बातें ज़्यादा लाइक-ए-कुबूल बन जाएँगी।

इमाम अबू-जाफ़र अल-तिबरी ने “पाकीज़ा लड़का” की तफ्सीर में लिखा है :-

“الغلام الزكى هو الطاهر من الذنوب” मुहावरे में लफ़ज़ ज़की (زكى) उस लड़के के लिए बोला जाता है जो गुनाह से बरी, मासूम व पाक हो। ये भी अरब इस्तिमाल करते हैं “غلام زاكٍ و زكى و عالٍ و على” यानी खालिस व पाक, बेमिसाल व बुलंद पाया लड़का।

ज - मसीह का ख़ुदा की तरफ़ से मुबारक होना

हम सूरह मर्यम 19:31 में ये अल्फ़ाज़ पढ़ते हैं :-

“और मैं जहां हूँ (और जिस हाल में हूँ) मुझे साहिब-ए-बरकत किया है।”

अल-तिबरी ने यूनुस बिन अब्द आला और सुफ़ियान की रिवायत की बुनियाद पर कहा है कि “وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا” उस ने मुझे ख़ैर का मुअल्लिम बना कर भेजा है।”

सुलेमान बिन अब्दुल जब्बार ने मुहम्मद बिन यज़ीद बिन खनीस मख़ज़ूमि से रिवायत की है “मैंने इब्ने अल-वरद को जो बनी मख़ज़ूम के गुलाम थे ये कहते सुना “एक आलिम की अपने से ज़्यादा बड़े आलिम के साथ मुलाकात हुई और सलाम के बाद उस से कहा : मेरे इल्म से क्या ज़ाहिर होना चाहिए? उस ने जवाब दिया, “ الامر بالمعروف والنهي عن المنكر ” (भलाई करने की ज़्यादा से ज़्यादा तालीम देना और बुराई से बचना) क्योंकि यही अल्लाह का दीन है जो उस ने अपने नबियों के ज़रीये अपने बंदों की तरफ़ भेजा है।□

फ़क़हा का इस बात पर इतिफ़ाक़ है कि हज़रत ईसा जहां भी हों मुबारक होंगे यानी उन की ज़ात बाइस-ए-बरकत है।

द - मसीह को रूहुल-कुदुस की मदद हासिल थी

सूरह अल-बकरह 2:253 में लिखा है :-

“और ईसा इब्ने मरियम को हमने खुली हुई निशानीयां अता कीं। और रूहुल-कुदुस से उन को मदद दी।□

इब्ने अब्बास कहते हैं “रूहुल-कुदुस वो नाम है जिसके वसीले ईसा मुर्दे ज़िंदा करते थे।□

अबू मुस्लिम का कहना है कि “रूहुल-कुदुस जिसके ज़रीये उन्हें ताईद व मदद हासिल थी ग़ालिबन वो ताहिर रूह थी जिसे अल्लाह तआला ने उन में फूंक दिया था और जिसके ज़रीये से अल्लाह ने उन्हें उन सबसे मुम्ताज़ बना दिया जिन्हें उस ने आम तरीके से यानी मर्द व औरत के नुतफ़े के इज्तिमा से ख़ल्क किया था।□

सूरह अल-निसा 4:171 में लिखा है :-

“मसीह मर्यम के बेटे ईसा ख़ुदा के रसूल और उस का कलिमा थे जो उस ने मर्यम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ़ से एक रूह थे। तो ख़ुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ।□

इस आयत का निचोड़ ये है कि अल्लाह ने ईसा को उन्ही की ज़ात में एक रूह अता कर दी थी जो उन की शख्सियत में उन की मदद करती रहती थी। लेकिन उलमा इस्लाम रूहुल-कुदुस जिससे मसीह को मदद व ताईद हासिल थी की तफ़सीर में मुतफ़िक नहीं हैं।

इब्ने अनस का कहना है कि “रूहुल-कुदुस वो रूह थी जो मसीह में फूंक दी गई थी, अल्लाह ने अपनी ज़ात के साथ इसलिए उसे मुताल्लिक किया है क्योंकि मसीह की तकरीम व तख़सीस मक़सूद थी। “अल-कूद्दू अल्लाह है और कौल “فنفخنا فيه من روحنا” इस की निशानदेही करता है।

अल-सदी और कअब की राय ये है कि “रूहुल-कुदुस जिब्रील हैं, और जिब्रील की मसीह की ताईद इस तरह पर थी कि वो आपके रफ़ीक़ थे, वही मदद करते और जहां-जहां वो जाते थे आपका साथ नहीं छोड़ते थे और ये कैफ़ीयत उस वक़्त तक रही ता आंका (यहाँ तक कि) मसीह आस्मान पर उठा लिए गए।

और इब्ने जुबैर ने इस बारे में कहा है “रूहुल-कुदुस अल्लाह का इस्म-ए-आज़म है जिससे मुर्दे जिंदा कर दिया करते थे।

अलका शानी ने कहा “अल्लाह ने जिस्मे ईसा को जिस्मानी नापाकियों और कदूरतों से पाक किया और आप एक रूहानी व मिसाली बदन में रूह मुतजसद थे। अल्लाह ने मसीह की रूह को माहौल और माद्दी असरात और समाजी असरात से पाक व साफ़ बनाए रखा ताकि रूहुल-कुदुस की ताईद व मुआवनत मिलती रहे जिसकी सूरत पर आप ढाल दिए गए थे।

इब्ने अता का कहना है कि “उम्दा तरीन पौदे वो हैं जिनके फल वैसे ही हों जैसे ईसा रूह-अल्लाह।

और इब्ने अब्बास ने ये कहा कि “ये रूह वो है जो फूंकी गई थी, और अल-कूदुस से मुराद खुद अल्लाह है, सो वो रूह-अल्लाह हैं।

ह - मसीह की वफ़ात के वक़्त उनका सऊद

हम सूरह आले इमरान 3:55 में पढ़ते हैं :-

اذْقَالَ اللَّهُ يَعْيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا

“उस वक़्त खुदा ने फ़रमाया कि ऐ ईसा मैं तुझे वफ़ात देने और अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ और काफ़िरो से तुझे पाक भी करने जा रहा हूँ।”

इमाम अल-फ़ख़र अल-राज़ी का कहना है कि “इस आयत की कई वज़ाहतें हैं जिनमें से हम दो का ज़िक्र कर रहे हैं :-

(1) “رَافِعُكَ إِلَيَّ” (अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ) का मतलब है कि “إلى محلّ كرامتي” (अपने मुक़ाम इज़्ज़त की जगह पर रखूँगा) ये रिफ़अत व अज़मत उन की शान के लिए, और ये आपके कौल से मिलता-जुलता है जो इन्जील से मुस्तआर लिया गया है कि “मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूँ।”

(2) अल्फ़ाज़ رَافِعُكَ إِلَيَّ की तावील ये है कि अल्लाह उन्हें एक ऐसी जगह उठा कर ले जाने वाला था जहां उन पर ना किसी का ज़ोर चलेगा ना हुक़म, क्योंकि ज़मीन पर इंसान एक दूसरे पर तरह तरह के हुक़म और फ़तवे लगाते हैं, लेकिन आस्मान पर तो दर-हकीक़त अल्लाह ही का हुक़म चलता है।

व - मसीह की रिसालत व सीरत की इस्मत

कुछ लोग ये ख़याल करते हैं कि रिसालत व पैग़म्बरी में बेगुनाही या इस्मत, चाल चलन या सीरत से वाबस्ता है। लेकिन ये ख़याल इसलिए बेइसास (बेबुनियाद) है क्योंकि कई कुरआनी आयात इस की तर्दीद करती हैं। हम बहुत सी ऐसी आयतें पढ़ते हैं जो ये बताती हैं कि अम्बिया किराम की ज़िंदगीयां ना क़बल रिसालत और ना बाद रिसालत, बेऐब व बे-मलामत थीं।

लेकिन कुरआन में सिर्फ़ मसीह की ज़ात मुबारका ऐसी है जो रिसालत में और सीरत के लिहाज़ से भी पाक व बेऐब नज़र आती है। इस बात की गवाही फ़रिश्ते ने भी दी जब उन की वालिदा से कहा “मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ कि तुम्हें पाकीज़ा

लइका बख्शुं।□ अल-बेजावी ने लफ़्ज़ “जकी” (جُكِي) की तफ़्सीर के तहत लिखा है कि ईसा साल ब साल आला और बुलंद होते चले गए।”

ज - मसीह की लासानी रिसालत के निशानात

जिस तरह से ताईद रूहुल-कुदुस के सबब मसीह की रिसालत मुन्फ़रिद (बेमिसाल) व लामिसाल थी वैसे ही आपके मोअजज़ात की गौना गोनी ऐसी थी कि किसी और नबी या रसूल में नहीं मिलती। कुरआन में हम पढ़ते हैं “और ईसा इब्ने-मरियम को हमने खुली हुई निशानीयां अता कीं। और रूहुल-कुदुस से उन को मदद दी।” (सूरह अल-बकरह 2:253) ये निशानात मोअजज़ात थे।

अल-बेजावी ने कहा कि “अल्लाह ने उन के सपुर्द खास खिदमत की और उन के मोअजज़ात को दीगर रसूल के मोअजज़ात पर तफ़ज़ील का सबब ठहराया। वो मोअजज़ात बड़े नुमायां और बेहद अज़ीम किस्म के थे, तादाद की कस्रत भी ऐसी थी कि किसी और नबी में ना थी।

ह - मसीह का इल्म-ए-ग़ैब

सूरह अल-जुखरुफ़ 43:61,57 में लिखा है :-

“और जब इब्ने मरियम को बतौर मिस्ल पेश किया गया तो तुम्हारी क्रौम के लोग इस से चिल्ला उठे.... और वो क्रियामत की निशानी हैं।□

अल-जलालैन “وَإِنَّ لَعَلْمَ” لِّلشَّاعَةِ” की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं “ईसा क्रियामत की घड़ी का इल्म थे, वो जानते हैं कि ये कब आएगी।□ लोग उमूमन खयाल करते हैं कि अल्लाह अपनी मख्लूक से मुन्फ़रिद (बेमिसाल) है कि उसी को फ़क़त क्रियामत की घड़ी का इल्म है, इस खयाल की रोशनी में ईसा के इस इम्तियाज़ खुसूसी का पता चलता है जो कुरआन आपको देता है।

त - मसीह का अल्लाह से तक्ररुब और शफ़ी होना

कुरआन शफ़ाअत के इख़्तियार को अल्लाह तक महदूद करता है जब कहता है :-

“शफ़ाअत तो सब खुदा ही के इख़्तियार में है।” (सूरह अल-जुमर 39:44)

और फिर कुरआन की एक आयत में शफ़ाअत को मसीह का एक इम्तियाज़ खुसूसी बयान किया गया है :-

“(वो वक़्त भी याद करने के लायक़ है) जब फ़रिश्तों ने (मर्यम से) कहा कि मर्यम खुदा तुमको अपनी तरफ़ से एक फ़ैज़ की बशारत देता है जिसका नाम मसीह (और मशहूर) ईसा इब्ने-मरियम होगा (और जो दुनिया और आख़िरत में बाआबरू और (खुदा के खासों में होगा।” (सूरह आले इमरान 3:45)

अल-जलालैन ने इस आयत की तफ़सीर करते हुए कहा “وَجِيهًا” दो एतबारात का हामिल है, दुनिया में आपकी नबुव्वत और आख़िरत में अल्लाह की नज़दीकी व तकरूब में आप का शफ़ाअत के इख़्तियारात रखना।□

अल-तिबरी ने इब्ने हमीद और सलमह और इब्ने इस्हाक़ और मुहम्मद बिन जाफ़र के सिलसिले का हवाला देते हुए कहा “وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا” का मतलब है इज़्जत व वकार का हामिल और दुनिया में अल्लाह की कुर्बत (नज़दीकी) में ज़िंदगी बसर करना। और अल्फ़ाज़ “وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ” का मतलब है कि मसीह उन में होंगे जिन्हें अल्लाह तआला रोज़-ए-कयामत अपनी कुर्बत (नज़दीकी) अता करेगा और अपने जवार में जगह देगा।

अल-राज़ी ने ईसा के बारे में लिखा है “वो दुनिया में इज़्जत व वकार के हामिल इसलिए थे कि आपकी दुआएं मुस्तजाब थीं कुबूल कर ली जाती थी, आपने मुर्दे ज़िंदा किए, अँधों और कोढ़ियों को शिफ़ा बख़शी और रोज़ आख़िरत अल्लाह उन को शफ़ी उम्मत बनाएगा।”

ताहम अल्फ़ाज़ “وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ” के बारे में कई नुक्ता नज़र हैं।

पहला ये कि अल्लाह ने मसीह को अपनी कुर्बत (नज़दीकी) अता कर के आपको एक इस्तिहकाक़ (कानूनी हक़) अज़ीम बख़शा और सिफ़त हम्द में मलाइका के दर्जात आला तक पहुंचा दिया है।

दूसरा ये कि ये बयान एक ऐलान है कि वो आस्मान पर उठाए जाएंगे और फ़रिश्तों के साथ होंगे।

तीसरा ये कि आइन्दा जहान में हर इज़्जत व वक्कार की हामिल शख्सियत मुकर्रब बारगाह इलाही ना हो सकेगी क्योंकि अहले-जन्नत अलग अलग मुरातिब व दर्जात में तक्सीम होंगे।

3- कुरआन में मसीह के मोअजिज़े

अलिफ़ - खल्क करने की कुद्रत

सूरह अल-माइदा 5:110 में लिखा है :-

“जब खुदा (ईसा से) फ़रमाएगा कि ऐ ईसा इब्ने मरियम मेरे उन एहसानों को याद करो.... जब मैंने तुमको किताब और दानाई और तौरात और इन्जील सिखाई और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूँक मार देते थे तो वो मेरे हुक्म से उड़ने लगता था।□

इब्ने अल-अरबी ने इस आयत की तफ़सीर में लिखा है कि :-

“अल्लाह ने ईसा को उन के रूह होने की वजह से इस किस्म की खुसूसीयत दी थी और उन के मिट्टी लेकर तख्लीक (परिंद) में नफ़ख़ यानी फूँकने को मुजाफ़ किया। जिंदगी बख़शने के मुआमले में सिवाए ईसा के इस तरह का नफ़ख़ और किसी के साथ मन्सूब नहीं किया गया। हाँ खुद अल्लाह तआला की ज़ात से ज़रूर मन्सूब किया गया।

ब - ब-वक़्त विलादत आपका गुफ़्तगु करना

जब मर्यम ने अपने बेटे को जन्म दिया तो उन की क़ौम वालों ने उन की खूब लानत मलामत की, क्योंकि वो यही खयाल करते थे कि बच्चा बद-चलनी का नतीजा है। तब कुरआनी बयान के मुताबिक़ :-

“मर्यम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया। वो बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है क्योंकि बात करें। बच्चे ने कहा कि मैं खुदा का बंदा हूँ उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है।□ (सूरह मर्यम 19:30,29)

अल-सदी का कहना है कि :-

“जब मर्यम ने क्रौम के उन अफ़राद की तरफ इस तरह का इशारा किया तो उन लोगों को बड़ा गुस्सा आया और बोले “इस का तम्सखर (मज़ाक) तो इस के ज़िना से भी ज्यादा संगीन है।□

एक और रिवायत बताती है कि “ईसा दूध पी रहे थे, जब उन्होंने ने ये गुप्तगु सुनी तो दूध छोड़ दिया और उन लोगों की तरफ रुख फेरा, और अपने बाएं तरफ के पहलू को टेका और अपने कलिमे की उंगली उठाई, तब उन लोगों को जवाब दिया।

अल-राज़ी ने एक और रिवायत बयान की है कि “हज़रत ज़करीया इस मौक़े पर हज़रत मर्यम की तरफ से यहूदीयों से मुनाज़रा करने आ मौजूद हुए थे और उन्होंने ने ही ईसा से कहा था कि “अब तुम अपनी हुज्जत पेश करो, अगर तुमको उस का हुक्म मिल चुका है। तब ईसा ने कहा “मैं खुदा का बंदा हूँ, उस ने मुझे हिक्मत दी है और मुझे नबी बनाया है।□

ज - मुर्दे ज़िंदा करना, जन्म के अँधों को बीनाई अता करना और कोढ़ीयों को शिफ़ा देना

मसीह की ही ज़बान से कुरआन ने ये कहा है :-

“और (मैं) अंधे और अब्रस को तंदुरुस्त कर देता हूँ। और खुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूँ।□ (सूरह आले इमरान 3:49)

सब ही जानते हैं कि “كَلْبًا” का मतलब वो शख्स है जो मादर-ज़ाद बीनाई से महरूम हो। और ये भी एक हकीकत है कि कोढ़ एक खतरनाक बीमारी है और दोनों ही अमराज़ इंसान के बस से बाहर और लाइलाज थे।

मुसन्ना की एक रिवायत जिसका सिलसिला इब्ने इस्हाक़, हफ़्स बिन उमर और अक्रमा से मिलता है ये बताती है कि “अल्लाह अज्ज व जल ने ईसा से कहा कि यही अल्फ़ाज़ वो बनी-इसाईल के सामने बतौर-ए-एहतजाज अपनी नबुव्वत की निशानी के तौर पर कहें क्योंकि ये दोनों अमराज़ लाइलाज हैं।□

अल्फ़ाज़ “وَأُحْيِ الْمَوْتَى” (मुर्दे जिंदा कर देता हूँ) के बारे में वहब बिन मंबा ने बयान किया है कि “हज़रत ईसा बच्चों के साथ खेल रहे थे तो अचानक एक लड़का एक छोटे लड़के पर टूट पड़ा और उस को लातें मार मार कर हलाक कर दिया। फिर उसे खून में लिथड़ा हुआ ईसा के क़दमों पर फेंक दिया, जब लोगों को खबर हुई तो उस का इल्ज़ाम ईसा पर ही लगाया गया और उन को पकड़ कर मिस्र के काज़ी के पास ले गए और ये इल्ज़ाम लगाया कि इसी ने क़त्ल किया है। काज़ी ने आपसे पूछा और ईसा ने जवाब दिया “मुझे नहीं मालूम कि इसे किस ने क़त्ल किया है और ना मैं इस का साथी हूँ।□ फिर उन्होंने ने ईसा को मारने का इरादा किया तो आपने उन से कहा “अच्छा लड़के को मेरे पास लाओ।□ वो बोले “मतलब क्या है तुम्हारा?” आपने फ़रमाया “लड़के से पूछ लूँगा कि किस ने उसे क़त्ल किया है?” वो कहने लगे “भला मुर्दे से कैसे बात कर के पूछ लेगा फिर वो आपको मक्तूल लड़के के पास ले गए। ईसा ने दुआ करनी शुरू की तो अल्लाह ने उस लड़के को जिंदा कर दिया।□

वहब ही की एक रिवायत ये भी है कि “कभी कभी तो ईसा के पास बीमारों की इतनी भीड़ लग जाती थी हत्ता कि एक एक मजमा पचास पचास हज़ार का हो जाता था। जिस मरीज़ में इतनी सकत होती वो आपके पास पहुंच जाता, और जिसमें आप तक पहुंचने की ताकत नहीं होती थी उस के पास आप खुद चले जाते थे और आप दुआ के ज़रीये उन लोगों का इलाज करते थे।□

अल-क़ल्बी से रिवायत है कि “हज़रत ईसा “يا حَيِّ يَا قَيُّوْم” की मदद से मुर्दे जिला देते थे। आपने आज़र (लाज़र) अपने एक दोस्त को भी जिंदा किया। आपने नूह के बेटे साम को भी क़ब्र से निकाला और वो जिंदा हो गया। एक बार एक बुढ़िया के मुर्दा बच्चे के पास से गुज़र हुआ तो उसके लिए दुआ की और चारपाई से उतर आया और अपने लोगों के पास जा कर जिंदगी गुज़ारने लगा और बाल बच्चेदार भी हुआ।□

द - ग़ैब का इल्म

मसीह की ज़बानी कुरआन ने ये भी कहा “और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो सब तुमको बता देता हूँ।” (सूरह आले इमरान 3:49)

इस ताल्लुक़ से उलमा दो बातें बयान करते हैं :-

पहली ये कि वो शुरू ही से ग़ैब की बातों की ख़बर दे दिया करते थे। अल-सदी ने रिवायत की है कि “वो लड़कों के साथ खेलते खेलते उन के माँ बाप के काम बता दिया करते थे। उन्होंने ने एक बच्चे को यहां तक बता दिया कि तेरी माँ ने तेरे लिए फुलां चीज़ फुलां जगह छिपा रखी है और जब वो बच्चा घर पहुंचा तो उस चीज़ के लिए रोता रहा यहां तक कि उसे हासिल कर के ही छोड़ा। इस का ये असर हुआ कि लोग अपने बच्चों को मसीह के साथ खेलने से ये कह कर रोकने लगे कि ये जादूगर है और उन्हें घर ही में रखने लगे और बाहर ना निकलने देते थे। जब ईसा उन की तलाश में उन के पास जाते तो लोग कह देते कि घर ही में नहीं हैं। एक बार मसीह ने पूछ लिया कि “अगर घर में नहीं हैं तो घर में कौन है? जवाब मिला “वो तो खिंजीर हैं। ईसा ने कहा “तब तो वो वैसे ही हो जाएंगे बाद में लोगों ने किया देखा कि वो वैसे ही बन चुके थे।”

और दूसरी बात ये कि इस तरह से तो ग़ैब की ख़बर देना मोअजिज़ा हुआ। नज़्मी लोग जो ग़ैब की ख़बर बताने का दावा करते हैं उन के लिए बग़ैर सवाल पूछे बताना मुश्किल होता है। फिर उन्हें तो ये एतराफ़ भी रहता है कि उन से गलतीयां भी सरज़द होती रहती हैं, और ग़ैब की ख़बर बिला किसी आला की मदद के और बग़ैर पूछ-गुछ के सिवा वही के और किसी तरीके से मुम्किन नहीं।

ह - आस्मान से दस्तर-ख़वान उतारना

कुरआन में कहा गया है कि :-

“(वो क्रिस्सा भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने मरियम क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि हम पर आस्मान से (तआम खाने का) ख़वान नाज़िल करे? उन्होंने ने कहा कि अगर ईमान रखते हो तो खुदा से डरो। वो बोले कि हमारी

ये ख्वाहिश है कि हम उस में से खाएं और हमारे दिल तसल्ली पाएं और हम जान लें कि तुमने हमसे सच्य कहा है और हम इस (खवान के नुजूल) पर गवाह रहें। (तब) ईसा इब्ने मरियम ने दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार हम पर आस्मान से खवान नाज़िल फ़र्मा कि हमारे लिए (वो दिन) ईद करार पाए यानी हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिए और वो तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़क दे तू बेहतर रिज़क देने वाला है।□ (सूरह माइदा 5:112-114)

नुजूल माइदा के बारे में उलमा इख्तिलाफ़ राय का शिकार हैं कि किस तरह वो खवान आस्मान से उतरा और उस की क्या कैफ़ीयत थी और उस में क्या-क्या चीज़ थी।

क़तादा ने जाबिर, यासिर बिन अम्मार, मुहम्मद के सिलसिले की रिवायत करते हुए बताया है कि “खवान उतरा और उस में रोटी और गोश्त था। इसलिए कि उन्होंने ने ईसा से ऐसी खुराक की दरख्वास्त की थी जिसे वो खाएं और वो खत्म होने का नाम ना ले। तब आपने फ़रमाया “अच्छा मैं ये दरख्वास्त मंज़ूर करता हूँ और वहां तुम्हारे दर्मियान उस वक़्त तक मौजूद रहेगी जब तक तुम उसे छुपाओगे नहीं और उस में खियानत नहीं करोगे, और अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हें अज़ाब दिया जाएगा। एक दिन ना गुज़रा था कि उन्होंने ने खियानत भी की और छुपा भी दिया, इसलिए खवान ऊपर उठा लिया गया और उन की सूरतों बिगड़ गई कि बंदर और खिंज़ीर बन गए।□

इब्ने अब्बास से ये रिवायत है कि “ईसा ने बनी-इस्राईल से (इस दरख्वास्त के बाद) ये कहा “तीस दिन रोज़े रखो और बाद में अल्लाह से जो चाहते हो माँगो। चुनान्चे उन्होंने ने तीस दिन रोज़े रखे और जब रोज़ों का इख़्तताम हुआ तो कहने लगे “ऐ ईसा रोज़े तो हमने रख लिए अब सख़्त भूक लगी है, अल्लाह से दुआ कीजिए ताकि आस्मान से अल्लाह माइदा (खाना) नाज़िल फ़रमाए। ये सुन कर हज़रत ईसा टाट ओढ़ कर और राख बिछा कर बैठ गए और दुआ में मशगूल हो गए, और फ़रिश्ते आस्मानी खवान लेकर उतरे जिसमें सात रोटियाँ और सात मछलियाँ थीं। उन्होंने ने इस खवान को उन के सामने ला कर रख दिया, फिर क्या था सबने शिकम सैर हो कर खाया और एक भी भूका ना रहा।

4 - क़ुरआन में मसीह की इब्नियत

कुरआन की तालीम की रोशनी में शख्सियत अल-मसीह पर गौर व खोज करने वाले के लिए मसीह की इब्नियत एक ऐसा मौजू है जिसने बहस व तमहीस को जन्म दिया है और इस ज़िम्न में पाँच नज़रियात पाए जाते हैं :-

अलिफ़ - पहला नज़रिया कुफ़्र का है

कुरआन में लिखा है “खुदा को सज़ावार नहीं कि किसी को बेटा बनाए वो पाक है जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उस को यही कहता है कि हो जा तो वो हो जाती है।” (सूरह मर्यम 19:35)

इस में ये भी लिखा है कि :-

“और कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है। (ऐसा कहने वालो ये तो) तुम बुरी बात (जबान पर) लाए हो। करीब है कि इस से आस्मान फट पड़ें और ज़मीन शक हो जाये और पहाड़ पारा-पारा हो कर गिर पड़ें। कि उन्हीं ने खुदा के लिए बेटा तज्वीज़ किया। और खुदा को शायं नहीं कि किसी को बेटा बनाए। तमाम शख्स जो आसमानों और ज़मीन में हैं सब खुदा के रूबरू बंदे हो कर आएँगे।” (सूरह मर्यम 19:88-93)

अल-फ़ख़्र अल-राज़ी की तफ़्सीर में आया है कि “मैं जानता हूँ कि अल्लाह तआला बुत-परस्तों की तर्दीद करने के बाद अब उन लोगों की तर्दीद कर रहे हैं जो उसके लिए बेटा साबित करते हैं। यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं और अरब ने फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहा है। इस आयत में ये सब शामिल हैं।

अल्फ़ाज़ “جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا” (तुम बुरी बात लाए हो) का मतलब है सच्चाई का बहुत बड़ा इन्कार। इसलिए ज़मीन के फट जाने और पहाड़ों के रेज़ा रेज़ा होने का मतलब ये हुआ कि उस पर अल्लाह का ग़ज़ब है जो ये कहता है कि “खुदा बेटा रखता है।□

ब - दूसरा नज़रिया ख़ालिक़ को मख़्लूक़ से मिला देने का नज़रिया है

कुरआन में लिखा है “और उन्होंने ने उस के बंदों में से उसके लिए औलाद मुकर्रर की। बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। क्या उस ने अपनी मख्लूक़ात में से खुद तो बेटियां लीं और तुमको चुन कर बेटे दिए।” (सूरह अल-जुखरूफ 43:16,15)

यहां एक सवाल उठ खड़ा होता है कि खालिक और मख्लूक़ में वो कौन सा रिश्ता है कि एक जुज्व मख्लूक़ अपने खालिक से मिल जाये? ये फ़ित्रतन और अक्लन नामुम्किन है। ऐसे लोगों ने अल्लाह के इस कौल को पेश किया है “तमाम शख्स जो आसमानों और ज़मीन में हैं सब खुदा के रूबरू बंदे हो कर आएँगे।” (सूरह मर्यम 19:93), और कहा है कि “अब्द (बंदे) का रब बन जाना मुम्किन नहीं, और अल्फ़ाज़ “بَدِيعَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ” (यानी अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है) को पेश करते हुए कहते हैं कि किसी मख्लूक़ का खालिक बन जाना मुम्किन नहीं है।

हम मसीही भी इस बात का इकरार करते हैं कि अल्लाह की मख्लूक़ात में से किसी एक हिस्सा या जुज्व का अपने खालिक में ज़म हो जाना जायज़ नहीं है लेकिन हमारे अक़ीदे में ये बात बाप और बेटे के ताल्लुक़ात पर मुंतबिक नहीं होती क्योंकि इब्न बाप के साथ जोहर में एक ही है, और कुरआन खुद ये कहता है कि मसीह कलिमतुल्लाह और उस की तरफ़ से रूह हैं। सो खुदा की मख्लूक़ का अपने खालिक में ज़म हो जाने का मसीह की इब्नियत के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं है।

ज - बेटा तो नर व मादा से मिलकर ही बज़रीये विलादत पैदा होता है

यहां इब्नियत के ताल्लुक़ से इस्लामी मफ़हूम में एक मुश्किल दरपेश है “उस के औलाद कहाँ से हो जब कि उस की बीवी ही नहीं।” (सूरह अल-अन्आम 6:101)

अल-बेज़ावी ने इस आयत पर अपने खयालात का इज़हार यूँ किया है “अक्ल जिस बात को तस्लीम करती है वलद (औलाद) के मुआमला में वो ये है कि वो दो हम-जिस नर व मादा के मिलाप से ही जन्म लेता है और अल्लाह तआला ऐसी बातों से पाक व बरी है।

इस्लाम का यही नज़रिया है जो अल्लाह के लिए किसी जन्मे हुए बेटे यानी वलद को नामुम्किन ठहराता है क्योंकि अल्लाह की कोई अहलिया (बीवी) नहीं और अल्लाह के लिए ऐसा मानना भी नामुम्किन है। अल्लाह के लिए मसीह के बाप होने को मुन्किर और अजीब सी बात मानने में यही एक राज़ है क्योंकि कुरआनी फ़िक्र में कोई बेटा हो ही नहीं सकता सिवा इस के कि जिस्मानी ताल्लुक वाक़ेअ हो।

तिबरी की तफ़्सीर जामेअ-उल-बयान में इसी की ताईद मिलती है। वहब और अबी जैद से रिवायत है कि “बेटा नर व मादा के मिलाप का नतीजा होता है और अल्लाह के लिए किसी साथी औरत या बीवी का तसव्वुर ही मुहाल है इसलिए बेटा (वलद) कहाँ से आएगा, नीज़ ये कि उसी ने तो सारी चीज़ें ख़ल्क की हैं और जब ये बात हो कि कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसे अल्लाह ने ख़ल्क ना किया हो तो उस के बेटा कैसे होगा?”

मुहम्मिक़ीन ने ये लिखा है कि ये मज़कूर आयत उन लोगों के हक़ में उतरी जो बिद्अती थे और जिनकी जड़ें बुत-परस्ती में गड़ी हुई थीं, ये लोग कलीसिया में शामिल हो गए और उस में बिद्अती तालीम फैलाने की कोशिश की कि मुक़द्दसा मर्यम खुदा हैं। उन के अन्दर यह खयाल उस वक़्त से था जब कि वो बुत-परस्ती का शिकार थे कि जुहरा सितारा जिसकी वो पूजा किया करते थे खुदा है। इसी फ़ासिद अक़ीदे ने जुहरा की जगह मर्यम को रख दिया।

अल्लामा अहमद अल-मकरिज़ी ने अपनी किताब “अल-कोल-उल-अबरेज़ी (القول البرزى) के सफ़ा 26 पर इस बात की तरफ़ इशारा किया है। और इब्ने हज़म ने अपनी किताब “अल-मलल व अल-अहवा व अल-नहल (الملل والاهواء والنحل) के सफ़ा 48 पर इस बिद्दत पर बहस की है। ये बिद्अती लोग ये मानते थे कि अल्लाह के बीवी है और उस से बच्चा भी है। अब वाज़ेह हो गया कि कुरआन ने इसी नज़रिये का रद्द किया है और मसीहियत का इस खयाल से दूर का भी वास्ता नहीं। चुनान्चे एक भी मसीही ऐसा नहीं मिलेगा जो ऐसी बात पर एतिक़ाद रखता हो। ये तो अल्लाह ज़ूल-जलाल व कुद्दूस की ज़ात की तौहीन है जो हर तरह के जिस्मानी ख़साइस से पाक व मुनज़ज़ह है।

हक़ीक़त तो ये है कि मसीहियों का वो अक़ीदा जो इन्ज़ील शरीफ़ पर मबनी है, उस पर ग़ौर व फ़िक्र करने वाले पर ये बात बख़ूबी वाज़ेह हो जाती है कि जनाब मसीह का इब्ने-अल्लाह होना अल्लाह की किसी बीवी के ज़रीये पैदा होने की वजह से नहीं है बल्कि

मोमिनों का ये ईमान है कि मसीह का इब्ने-अल्लाह होना वजूद व ज्ञात इलाही से उन के सदूर की वजह से है जिसकी सिफ़त बताई गई कि मसीह खुदा का वो कलिमा हैं जो इब्तिदा से खुदा के साथ था और रूह-उल-कुदुस की मार्फ़त वो मर्यम में हमल की शक़ल इख़्तियार कर गया।

पौलुस रसूल ने इसी हकीक़त की तरफ़ इशारा किया जब रोमीयों 1:1-4 में लिखा,

“पौलुस की तरफ़ से जो येसू मसीह का बंदा है और रसूल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उस खुशख़बरी के लिए मख़सूस किया गया है, जिसका उस ने पेशतर से अपने नबियों की मार्फ़त किताबे मुक़द्दस में अपने बेटे हमारे खुदावंद येसू मसीह की निस्बत वाअदा किया था। जिस्म के एतबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ लेकिन पाकीज़गी की रूह के एतबार से मुर्दों में से जी उठने के सबब से कुद़त के साथ खुदा का बेटा ठहरा।□

द - चौथा नज़रिया है कि मसीह खाता था

सूरह अल-माइदा 5:75 में लिखा है :-

“मसीह इब्ने मरियम तो सिर्फ़ (खुदा के) पैग़म्बर थे उन से पहले भी बहुत से रसूल गुजर चुके थे और उन की वालिदा (मर्यम) खुदा की वली और सच्ची फ़रमांबर्दार थीं दोनों (इन्सान थे और) खाना खाते थे देखो हम उन लोगों के लिए अपनी आयतें किस तरह खोल खोल कर बयान करते हैं फिर (ये) देखो कि ये किधर उल्टे जा रहे हैं।□

अब इस्लामी फ़िक़्र का कहना ये है कि मसीह को इलोही सिफ़ात से मुत्सिफ़ करना ग़ैर-मुम्किन है क्योंकि ये बात उन की बशरियत से वाज़ेह है, जो खाना खाता हो वो कैसे खुदा बन सकता है?

अल-राज़ी ने अपनी तफ़सीर में इस आयत के बारे में लिखा है :-

(1) “जिस किसी शख़्स की भी माँ हो वो ऐसा हादिस और नोपैद है जो पहले नहीं था, और जो इस तरह हो वो मख़लूक़ हुआ ना कि खुदा।□

(2) “दोनों (ईसा और मर्यम) को खुराक की अशद हाजत (बहुत जरूरत) थी और खुदा तो वो हस्ती है जो इन सारी चीजों से बेपरवा और गनी है, इसलिए मसीह कैसे खुदा हो सकते हैं?”

(3) “अल्फ़ाज़ “दोनों खाना खाते थे” उन की इंसानियत का इज़हार हैं क्योंकि हर कोई जो खुराक खाता है वो फ़ानी है। (लेकिन अल-राज़ी ने इस नुक्ता नज़र को ज़ईफ़ करार दिया है।

ह - पांचवां नज़रिया मख़लूक का नफ़ा व नुक़सान पहुंचाने से आजिज़ होना है

सूरह अल-माइदा 5:76 में लिखा है :-

“कहो कि तुम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ की क्यों परस्तिश करते हो जिसको तुम्हारे नफ़ा और नुक़सान का कुछ भी इख़्तियार नहीं? और खुदा ही (सब कुछ) सुनता जानता है।”

मुफ़स्सिरों ने इस आयत को नसारा के कौल के फ़ासिद होने पर दलील ठहराया है क्योंकि उन के ख़याल में इस से कई तरह की हुज्जत उठ खड़ी होती है।

(1) यहूदी लोग मसीह से दुश्मनी करते और हर वक़्त उन के ख़िलाफ़ रेशा दवानी करते रहते थे लेकिन मसीह उन को किसी तरह का भी नुक़सान पहुंचाने की कुद्रत नहीं रखते थे। उन के हवारी व मददगार उन से बड़ी मुहब्बत करते थे लेकिन वो उन्हें किसी तरह का दुनियावी फ़ायदा ना पहुंचा सके। अब जो नफ़ा व नुक़सान पहुंचाने पर कुद्रत ना रखे उसे किस तरह खुदा तस्लीम किया जा सकता है।

इस आयत की तफ़्सीर करते हुए अल-बेज़ावी ने लिखा है “ईसा को कि गोया ये इम्तियाज़ हासिल था क्योंकि अल्लाह ने उन्हें इस का मालिक तो बनाया था लेकिन ये तमलिक उन की ज़ाती ना थी।”

लेकिन हम कहते हैं कि अगर येसू महज़ कुरआन के ही ईसा होते (यानी कुरआन ने जैसे उन्हें पेश किया है) यानी बंदा व गुलाम ईसा तो हम ज़रूर ये मान लेते कि उन की अपनी ज़ात में ना नफ़ा पहुंचाने की सकत थी ना नुक़सान पहुंचाने की कुद्रत। लेकिन जैसा यसअयाह नबी ने बयान किया है येसू “कादिर खुदा है।” और हम तो इसके लिए शुक्रगुज़ार हैं क्योंकि मसीह की रिसालत नुक़सान और माद्री नफ़ा से बालातर थी, बल्कि उन की रिसालत ख़लास आसीयाँ थी और कुरआन ने इसी हकीकत का इज़हार इस तरह किया है कि मसीह रहमतुल-लिल-आलमीन बन कर आए थे।

(2) दूसरी हुज्जत ये पेश की जाती है कि मसीही मज़हब ये मानता है कि यहूदीयों ने मसीह को सलीब पर लटका दिया था और उन की पिसलियाँ छेद दी गई थीं और जब वो प्यासे हुए और पानी मांगा तो उन्होंने ने उन के हलक़ में सिरका उंडेल दिया था। ऐसी कमज़ोरी और बेबसी की हालत रखने वाले को कैसे खुदा माना जा सकता है?

(3) तीसरी बात ये कि कायनात के मालिक खुदा को अपने सिवा हर चीज़ से बेनियाज़ होना चाहिए और उस के मासिवा सारी चीज़ों को उस का मुहताज। अगर ईसा बेनियाज़ होते तो अल्लाह की इबादत में मशगूल होने से भी बेनियाज़ होते क्योंकि अल्लाह तो किसी की इबादत नहीं करता। ये तो इंसान है जो अल्लाह की इबादत करता है। बतरीक़ तवातर ये बात साबित है कि ईसा ताअत व इबादत में मसरूफ़ रहते थे और ऐसा खुद नफ़ा हासिल करने के लिए और दूसरे की तरफ़ दफ़ाअ मुज़रत के लिए करते थे। फिर जिसकी ये हालत हो वो बंदों की तरफ़ फ़वाइद कैसे पहुंचाए और उन्हें बुराई से कैसे बचाए? वो ऐसे ही थे, दूसरे आजिज़ बंदों की तरह एक बंदा थे।

5 - इस्लाम में मसीह की उलूहियत

इस्लाम और मसीहियत के दर्मियान मुज़ाकरा और गुफ़्त व शनीद के बीच जो चीज़ सबसे ज़्यादा आड़े आती है वो है मसीह में उलूहियत का मसीही अकीदा, जिसे इस्लाम में कुफ़्र से ताबीर किया जाता है। इस की मुखालिफ़त में बहुत सी कुरआनी आयतें मिलती हैं जिनमें से चार बहुत सरीह हैं जो सूरह अल-माइदा में हैं, और एक सूरह अल-निसा में वाक़ेअ है।

अलिफ़ - पहली आयत

“जो लोग इस बात के काइल हैं कि ईसा बिन मर्यम खुदा हैं वो बेशक काफ़िर हैं (उनसे) कह दो कि अगर खुदा ईसा बिन मर्यम को और उन की वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको हलाक करना चाहे तो उस के आगे किस की पेश चल सकती है?” (सूरह अल-माइदा 5:17)

इस आयत की शरह करते हुए अल-राज़ी कहते हैं कि यहां एक सवाल उठता है कि अगर मसीहियों में कोई भी ये नहीं कहता था कि अल्लाह ही मसीह इब्ने मरियम हैं तो फिर इस तरह की बात अल्लाह ने क्यों कही? इस का जवाब ये है कि “حلوليه” (हलुलिया) गिरोह के लोग ये मानते हैं कि अल्लाह तआला किसी इंसान खास के बदन में या उस की रूह में हलूल कर जाता या समा जाता है। अगर ऐसी बात है तो ये मानना कुछ बर्ड भी नहीं है कि शायद नसारा में कुछ लोग ऐसी बात कहते और मानते रहे होंगे। और फिर मसीही ये मानते हैं कि उकनूम-अल-कलमा (اقنوم الكلمة) ईसा के साथ मुत्हिद था।

अब उकनूम-अल-कलमा (اقنوم الكلمة) या तो ज़ात होगा या सिफ़त होगा। अगर ज़ात मानें तो ये मानना होगा कि अल्लाह तआला की ज़ात ईसा में उतरी और समा गई। तब तो ईसा अल्लाह हो गए। और अगर हम उकनूम को सिफ़त से ताबीर करें तो फिर सिफ़त का एक ज़ात से दूसरी ज़ात में मुंतकिल हो जाना ग़ैर-माकूल बात है।

फिर ज़ाते इलाही से ईसा की तरफ़ अगर उकनूम इल्म के इंतिकाल को तस्लीम करें तो खुदा की ज़ात का इल्म से खाली होना लाज़िम आएगा और इस सूरत में ये मानना पड़ेगा कि जो आलिम नहीं वो अल्लाह नहीं। फिर तो नसारा ही की बात के मुताबिक़ ईसा खुदा हो गए। पस इस से साबित है कि नसारा अगरचे ऐसी बात खुल कर नहीं कहते लेकिन उन के मज़हब का निचोड़ यही है।

फिर अल्लाह सुब्हाना ने इस मज़हब व अक्रीदा के फ़साद पर ये कह कर हुज्जत पेश की है कि अगर अल्लाह ईसा बिन मर्यम को और उन की वालिदा को हलाक करना चाहे तो उस के आगे किस की पेश चल सकती है? इन अल्फ़ाज़ से मुफ़स्सिरों ने ये मुराद

लिया है कि ईसा भी शकल व सूरत, बदन, सिफ़ात व अहवाल के एतबार से उन ही लोगों की तरह हैं जिन्हें “لمن في الارض” यानी ज़मीन वाले कहा गया है। हालाँकि ऐसा नहीं है।

ब - दूसरी आयत

“वो लोग बे-शुब्हा काफ़िर हैं जो कहते हैं कि मर्यम के बेटे (ईसा) मसीह खुदा हैं। हालाँकि मसीह यहूद से ये कहा करते थे कि ऐ बनी-इस्राईल खुदा ही की इबादत करो जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी (और जान रखो कि) जो शख्स खुदा के साथ शिर्क करेगा। खुदा उस पर बहिश्त (जन्नत) को हराम कर देगा। और उस का ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।” (सूरह अल-माइदा 5:72)

इमाम अल-राज़ी की इस आयत पर शरह ये है कि “अल्लाह ने जब यहूदीयों के साथ इस्तिक़सा किया और जहां तक बात जाती थी कर चुका तो इस आयत में नसारा के मुआमले पर गुफ़्तगु की और उन के एक गिरोह की हिकायत बयान करते हुए कहा कि वो मानते हैं कि अल्लाह तआला ने ईसा की ज़ात में हलूल किया और उन के साथ मिलकर एक हो गया।

ज - तीसरी आयत

“वो लोग (भी) काफ़िर हैं जो इस बात के काइल हैं कि खुदा तीन में का तीसरा है। हालाँकि उस माबूद यकता के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। अगर ये लोग ऐसे अक्वाल (व अकाइद) से बाज़ नहीं आएँगे तो उन में जो काफ़िर हुए हैं वो तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब पाएँगे।” (सूरह अल-माइदा 5:73)

मुसलमानों ने इस आयत को लेकर मसीहियों पर ये इल्ज़ाम लगाया है कि वो तीन खुदाओं यानी अल्लाह, ईसा और मर्यम की इबादत करते हैं।

अल-राज़ी ने मसीहियों के इस अक़ीदे के बारे में ये बयान किया है “नसारा के बारे में ये बात कही जाती है कि वो दाअवा करते हैं कि “अल्लाह जोहर वाहिद और तीन अक़ानीम वाला है यानी बाप, बेटा और रूहुल-कुदुस। ये तीनों एक ही खुदा हैं, मसलन जैसे सूरज में कुरस, शुआ और हरारत (टिकिया, किरण, गर्मी) पाई जाती है। मसीही लोग बाप

से मुराद ज़ात लेते हैं और बेटे से मुराद अल-कलमा और रूह से मुराद ज़िंदगी लेते हैं। उन्होंने ने ज़ात, कलमा और ज़िंदगी को इस तरह साबित किया है कि अल-कलमा जो कि अल्लाह का कलाम है ईसा के जसद में जा कर घुल मिलकर एक हो गया जैसे पानी और शराब का या पानी और दूध का इखतिलात हो जाता है। मसीहियों का भी यही खयाल है कि बाप खुदा है, और बेटा खुदा है और रूह खुदा है। फिर अल-राज़ी ने इस तअलीक से ये शरह खत्म कर दी कि “मालूम होना चाहिए कि ये खयाल बुतलान और खिलाफ़ अक्ल है क्योंकि तीन एक नहीं हो सकते और एक तीन नहीं हो सकता।”

द - चौथी आयत

“और (उस वक़्त को भी याद रखो) जब खुदा फ़रमाएगा कि ऐ ईसा बिन मर्यम क्या तुमने लोगों से कहा था कि खुदा के सिवा मुझे और मेरी वालिदा को माबूद मुकर्रर करो? वो कहेंगे कि तू पाक है मुझे कब शायं था कि मैं ऐसी बात कहता जिसका मुझे कुछ हक़ नहीं। अगर मैंने ऐसा कहा होगा तो तुझको मालूम होगा (क्योंकि) जो बात मेरे दिल में है तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर में है उसे मैं नहीं जानता बेशक तू अल्लाम-उल-गयूब है।” (सूरह अल-माइदा 5:116)

अल-राज़ी को इस आयत में कई बातें नज़र आई हैं :-

पहली तो ये कि इस का ताल्लुक अल्लाह के बयान “ऐ ईसा इब्ने मरियम मेरे उन एहसानों को याद कर जो मैंने तुम पर किए” से है। वो इसे उस शान व वजाहत से मिलाता है जो ईसा को रोज़े क्रियामत होगी।

दूसरी बात ये कि अल्लाह ग़ैब की बातों का जानने वाला है। और ये जानता है कि ईसा ने ऐसी कोई बात नहीं कही थी और अल्लाम-उल-गयूब को इस तरह का सवाल भी ज़ेबा नहीं देता तो फिर इस तरह का हज़रत ईसा से खिताब क्यों? इस का अगर ये जवाब दिया जाये कि इस खिताब से ये गर्ज़ थी कि नसारा को मलामत और बुरा-भला कहा जाये तो हम कहेंगे कि किसी मसीही ने कभी ये नहीं कहा कि अल्लाह के इलावा ईसा और मर्यम दो खुदा थे। तो फिर ऐसी बात को उन की तरफ़ मन्सूब करना जो उन्होंने ने कभी कही ही नहीं कैसे जायज़ है?

पहला नुक्ता कि “क्यों वो उन से मुख़ातिब हुआ?” का जवाब ये दिया गया कि ये आयत इस्तिफ़हाम-ए-इन्कारी के तौर पर लाई गई यानी उन्होंने ने इस बारे में कोई तालीम नहीं सिखाई।

दूसरे सवाल का जवाब ये है कि अल्लाह तआला ही ख़ालिक है। हालाँकि मसीही ये मानते हैं कि ईसा और मर्यम के हाथों जो मोअजिजे ज़ाहिर हुए उन के ख़ालिक या करने वाले ख़ुद ईसा थे और अल्लाह ने उन्हें नहीं किया था। अब ऐसी बात हुई तो मसीहियों ने कहा कि इन सारे मोअजज़ात के ख़ालिक ईसा व मर्यम थे, अल्लाह नहीं था। सो किसी हद तक उन्होंने ने इस बात को मान लिया कि ईसा और मर्यम उस के इलावा दो ख़ुदा हैं, साथ ये भी कि अल्लाह तआला ख़ुदा नहीं था। अल-राज़ी का मानना है कि बहुत सी हिकायात और रिवायत इस तावील के साथ मुत्तफ़िक़ हैं।

ताहम कुरआन के मुफ़स्सिरों के दर्मियान इस बात में इख़्तिलाफ़ राय है कि ईसा से इस तरह का सवाल आख़िर अल्लाह ने किस वक़्त किया?

अल-सदी कहते हैं कि “जब अल्लाह ने ईसा को अपनी तरफ़ उठाया था तब ये सवाल किया था कि “क्या तुमने लोगों से कहा था कि ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी वालिदा को माबूद मुकर्रर करो?□

लेकिन क़तादा की राय है कि “ये सवाल अभी उन से किया ही नहीं गया, कियामत के दिन किया जाएगा इस राय से इत्तिफ़ाक़ करने वालों में इब्ने जरीह और मेसरह भी हैं”

ह - पांचवीं आयत

“ऐ अहले-किताब अपने दीन (की बात) में हद से ना बढ़ो और ख़ुदा के बारे में हक़ के सिवा कुछ ना कहो। मसीह (यानी) मर्यम के बेटे ईसा (ना ख़ुदा थे ना ख़ुदा के बेटे) बल्कि ख़ुदा के रसूल और उस का कलिमा (बशारत) थे जो उस ने मर्यम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ़ से एक रूह थे। तो ख़ुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ। और (ये) ना कहो (कि ख़ुदा) तीन (हैं)। इस एतिक़ाद से) बाज़ आओ कि ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है। ख़ुदा ही माबूद वाहिद है।□ (सूरह अल-निसा 4:171)

अबू जाफ़र अल-तिबरी ने इस आयत की तफ़्सीर में लिखा है कि “ऐ अहले इन्जील यानी नसारा तुम दीन में सच्ची बात से तजावुज ना करो ताकि इफ़रात व तफ़रीत के मुर्तकिब ना बनो और ईसा के हक़ में सच्ची बात के इलावा और कुछ ना कहो। अल्लाह को सालुस सलसा (तीन में का तीसरा) कहने से बचो कि ये अल्लाह पर झूट और उस के साथ शिर्क करने की बात हुई। इस से बचते रहो तो तुम्हारी इस में भलाई है क्योंकि इस तरह की बात कहने वाले के लिए जल्द आने वाला अज़ाब है कि अगर अपनी बात पर अड़े रहोगे और सच्ची और हक़ बात की तरफ़ रुजू ना करोगे।”

इस्लाम में इस उलझी हुई मुश्किल की वजह ये एतिकाद है कि तस्लीस से मुराद तीन खुदा यानी अल्लाह, ईसा और मर्यम हैं। हालाँकि मसीहियत ने एक अर्सा दराज़ से यानी इस्लाम से पहले के ज़माने में और बाद में भी पुकार पुकार कर कहा है कि लफ़ज़ तस्लीस का तसव्वुर जो तीन अलैहदा खुदाओं को ज़ाहिर करता हो हमारे हाँ मौजूद नहीं है। ये तो बिद्अती और ग़लत तालीम रखने वालों के औहाम हैं जिन्हें मसीही कलीसिया ने अपनी जमाअत से निकाल बाहर किया था और उन की इस बिद्दत को सख़्ती से कुचला गया था। कबल अज़ इस्लाम जाहिलियत के ज़माने में अरब में ऐसे बिद्अती मौजूद थे। उन्हीं से इस्लाम ने मसीहियत का बिगड़ा हुआ तसव्वुर लिया और उसे हक़ीकी मसीहियत समझा।

6- इस्लाम में मसीह की इन्सानियत

इस्लाम में मसीह के इंसानी पहलू पर बड़ा ज़ोर दिया जाता है और इस ज़िम्न में दो बातें अहम हैं मसीह अब्द (बंदा) हैं रब नहीं, और मसीह मिस्ल आदम हैं।

अलिफ़ - मसीह अब्द (बंदा) हैं, रब नहीं

कुरआन ने मसीह की ज़बान से कहा “मैं खुदा का बंदा हूँ उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। और मैं जहां हूँ (और जिस हाल में हूँ) मुझे साहिबे बरकत किया है और जब तक जिंदा हूँ मुझको नमाज़ और ज़कात का इर्शाद फ़रमाया है। और (मुझे) अपनी माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख़्त नहीं बनाया।” (सूरह मर्यम 19:30-32)

इमाम अल-राज़ी इस आयत की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि “अब्दुल्लाह के चार फ़वाइद हैं।□

(1) **पहला फ़ायदा** : ये मसीहियों के इस वहम को दूर करता है कि ईसा खुदा हैं।

(2) **दूसरा फ़ायदा** : मसीह ने जो अपनी बंदगी और अबदियत का इकरार किया है तो अगर वो अपनी बात में सच्चे थे तो हमारा मक्सद पूरा हो गया और अगर अपने क़ौल में सच्चे नहीं हैं तो जो उन में कुव्वत थी वो इलाही कुव्वत नहीं थी बल्कि शैतानी कुव्वत हो गई, चुनान्चे दोनों सूरतों में मसीह का खुदा होना बातिल हो गया।

(3) **तीसरा फ़ायदा** : उस वक़्त का अहम तकाज़ा ये था कि मर्यम की ज़ात-ए-पाक से ज़िना की तोहमत का रद्द किया जाये। फिर ये कि ईसा ने इस पर नस नहीं किया बल्कि खुद अपनी बंदगी के इस्बात पर नस किया है, गोया कि अल्लाह तआला पर तोहमत को हटाना उन्होंने ने अपनी माँ पर लगाई गई तोहमत को हटाने से ज़्यादा ज़रूरी समझा, इसलिए खुद को खुदा का बंदा कहा।

(4) **चौथा फ़ायदा** : अल्लाह की ज़ात-ए-पाक पर लगाई हुई तोहमत के इज़ाले की बात से ये फ़ायदा पहुंचा कि वालिदा पर की तोहमत भी जाइल हो गई, क्योंकि अल्लाह तआला किसी गिरी हुई फ़ाजिरा औरत को इस आली मर्तबत और अज़मत वाले बच्चे यानी मसीह ईसा की माँ बनने के लिए मख़्सूस नहीं कर सकता।

इस के बाद वो लाहोतियत मसीह के मसीही अक़ीदे पर राय ज़नी करते हैं कि “नसारा का मज़हब ख़बत से भरा हुआ है यानी एक तरफ़ तो वो ये कहते हैं कि अल्लाह तआला के ना जिस्म है और ना हिय्यज़ है, इस के बावजूद हम उन की एक ऐसी तक्सीम का ज़िक्र करते हैं जो उन के मज़हब के बुतलान के लिए काफी है। चुनान्चे हमारा कहना ये है कि अगर वो अल्लाह को किसी हिय्यज़ में मानें तो अज्जाम के हुदूस पर उन के क़ौल को हमने बातिल कर दिया। अगर वो मानें कि अल्लाह को कोई हिय्यज़ नहीं तो उन के ये कहने से उन की इस बात का बुतलान होगा कि अल्लाह का कलमा इंसानियत से इस तरह मख़लूत हो गया जैसे पानी शराब में या आग अंगारे में, क्योंकि ऐसी बात का होना जिस्म में ही समझ में आ सकता है।

राक़िम-उल-हरूफ़ का खयाल है कि मसीह की शख़्सियत पर कुरआन की राय ज़नी और ग़ौर व फ़िक्र दो हकीकतों पर मुन्हसिर मालूम होती है और उन में एक ऐसा भेद है जिसे फ़ित्री इंसान समझ नहीं पाता। पहली हकीकत तो ये है कि मसीह इब्ने मरियम होने के नाते अब्दुल्लाह (खुदा के बंदे) हैं। इस हकीकत का इज़हार अम्बिया किराम ने अपनी जबान से अदा किया, मसलन यसअयाह नबी के सहीफ़े 53 बाब की तेरहवीं आयत मुलाहिज़ा हो जहां लिखा है कि “देखो मेरा खादिम इकबालमंद होगा। वो आला व बरतर और निहायत बुलंद होगा।”

फिर इसी सहीफ़े के 53 बाब की ग्यारवीं आयत में लिखा है कि “अपने ही इफ़ान से मेरा सादिक़ खादिम बहुतों को रास्तबाज़ ठहराएगा क्योंकि वो उन की बदकिर्दारी खुद उठा लेगा।□

दूसरी हकीकत ये है कि मसीह के बंदे होने की सिफ़त की कुरआन की उस आयत से नफ़ी नहीं होती जिसमें उन्हें अल्लाह का कलमा और उस की रूह कहा गया है।

इस नस कुरआनी में जो कि दो पहलू की हामिल है जो शख़्स गहराई से ग़ौर व फ़िक्र करेगा उस पर पौलुस रसूल का ये ऐलान खूब ज़ाहिर हो जाएगा जिसका ज़िक्र रोमीयों 4:1-4 में मिलता है कि : “(येसू मसीह) जिस्म के एतबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ। लेकिन पाकीज़गी की रूह के एतबार से मुर्दा में से जी उठने के सबब से कुद्रत के साथ खुदा का बेटा ठहरा।□

ब - मसीह मिस्ले आदम हैं

सूरह आले इमरान 3:59 में लिखा है कि “ईसा का हाल खुदा के नज़दीक आदम का सा है कि उस ने (पहले) मिट्टी से उनका क़ालिब बनाया फिर फ़रमाया कि (इन्सान) हो जा तो वो (इन्सान) हो गए।□

अबू जाफ़र अल-तिबरी की किताब जामे-उल-बयान में लिखा है कि “अल्लाह तआला ने फ़रमाया : ऐ मुहम्मद नजरान से आए हुए नसारा को बता दो कि मेरा ईसा को बिला किसी मर्द के पैदा कर देना वैसा ही है जैसा मैंने आदम से कहा था कि हो जा तो वो बिला

किसी नर व मादा के वजूद में आ गया। चुनान्चे बिला किसी मर्द के उन की माँ से ईसा को खल्क करना मेरे आदम को खल्क कर देने से ज़्यादा अजीब नहीं है।□

मुहम्मद बिन साद ने अपने बाप से और उन के बाप ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि “शहर नजरान से एक जमाअत आँहज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुई, उन में सय्यद और आक्बिब थे। उन्होंने ने मुहम्मद से पूछा “आप हमारे साहब के बारे में क्या कहते हैं? उन्होंने ने जवाबन पूछा “तुम्हारे साहब कौन हैं? कहा गया “ईसा जिनको आप अल्लाह का बंदा कहते हैं।□ हज़रत मुहम्मद ने जवाब दिया “हाँ हाँ वो तो अल्लाह के बंदे थे।□ इस पर वो लोग बोले “क्या आपने ईसा की तरह किसी और को भी देखा है या उन जैसे किसी और के बारे में आपको ख़बर है।” ये कह कर वो लोग वहां से चले गए। फिर अल्लाह समीअ अलीम की तरफ़ से जिब्रील ये पैग़ाम लेकर आए कि “जब दुबारा वो लोग आए तो उन से कहो “ان مثل عيسى عند الله كمثل آدم”

एक और रिवायत है जो मुहम्मद बिन अल-हुसैन, अहमद बिन अल-मफ़ज़ल के सिलसिले में अल-सदी ने की है कि “जब मुहम्मद मबऊस हुए और नजरान के लोगों को आपकी ख़बर हुई तो नजरानियों की तरफ़ से चार ऐसे अशखास आपके पास भेजे गए जो कौम में आला मर्तबा के हामिल थे, यानी अलआक्बिब, अल-सय्यद, मासरजिस और मारेजज़। जब ये आए तो आँहज़रत से पूछा कि आपका ख़याल ईसा के बारे में क्या है? आपने जवाब दिया “वो अल्लाह के बंदे और अल्लाह की रूह और अल्लाह का कलमा हैं।□ इस पर वो बोले “नहीं, वो तो अल्लाह हैं जो अपनी बादशाही छोड़कर नीचे उतरे और मर्यम के बतन में चले गए, फिर वहां से पैदा हुए और हम पर जाहिर हुए। क्या आपने कभी ऐसा भी आदमी देखा है जो बग़ैर बाप के पैदा हुआ हो?” इस पर अल्लाह ने आयत नाज़िल की कि “ان مثل عيسى عند الله كمثل آدم”

एक तीसरी रिवायत बसिलसिला अल-क़साम, इब्ने जरीज और अक्रम बयान की जाती है कि “हमें पता चला कि नजरान के नसारा का एक वफ़द आँहज़रत के पास आया जिसमें आक्बिब और सय्यद भी थे जिन्होंने ने पूछा “ऐ मुहम्मद आप हमारे साहब को क्यों बुरा बोलते हैं?” आपने फ़रमाया “तुम्हारे साहब कौन हैं?” उन्होंने ने कहा मर्यम के बेटे ईसा जिन्हें आप बंदा और ख़ादिम बताते हैं। आपने फ़रमाया “हाँ अल्लाह के बंदे भी थे और वो अल्लाह का कलमा भी थे जो मर्यम की तरफ़ पहुंचाया गया था और अल्लाह की तरफ़ से

भेजी गई रूह भी थे। आपके इन अल्फाज़ पर उन्हें गुस्सा आ गया और वो बोले “अगर आप सच कहते हैं तो हमें कोई ऐसा बंदा दिखाइये जो मुर्दे जिंदा कर दिया करता हो, जन्म के अँधों को बीनाई अता कर देता हो और कोढ़ियों को सेहत अता करता हो, और जो सनी हुई मिट्टी से परिंद जैसी चीज़ बना कर उस में फूंक देता हो और वो जिंदा परिंद बन जाता हो?” इस पर आँहज़रत खामोश रहे हता कि जिब्रील आए और कहा “ऐ मुहम्मद कुफ़्र बका उन लोगों ने जिन्हों ने ये कहा कि अल्लाह तो मसीह इब्ने मरियम ही है। आँहज़रत ने कहा “जिब्रील उन्हों ने तो ये पूछा है कि ईसा जैसा और कौन है? तब जिब्रील बोले “ईसा की मिसाल आदम जैसी है।”

7 - किताब-ए-मुक़द्दस (बाइबिल में मसीह)

अलिफ़ - मसीह की उलूहियत

इस में शक नहीं कि जो शख्स मसीहियत की बातों को जानने में दिलचस्पी रखेगा उसे कई अहम और संजीदा मसाइल से दो-चार होना पड़ेगा और शायद उन सब में सख्त मसअला मसीह की तरफ़ उलूहियत की मंसूबी का मसअला है।

इस से मेरी मुराद मसीहियों का ये पुख्ता अक़ीदा है कि येसू जिसने फ़िलिस्तीन में जन्म लिया एक कुँवारी मर्यम नाम की औरत से पैदा हो कर उस ने इसी सर-ज़मीन पर कुछ अर्सा जिंदगी गुजारी, वो इब्ने-अल्लाह भी है और साथ ही साथ खुदा बेटा भी है।

ये एतिक़ाद अक्सर बड़ा मुश्किल नज़र आता है, लेकिन याद रहे कि किसी सवाल का मुश्किल होना मसीही मज़हब को वाहिद सच्चा दीन होने से रोक नहीं देता। ज़ात-ए-बारी वाहिद में तीन अक़ानीम के वजूद का मसीही अक़ीदा इस बात को ज़रूरी करार नहीं देता कि एक दूसरे से वक़्त में मुक़द्दम है या ये कि एक दूसरे से किसी भी तरह से बड़ा है। हाँ ये ज़रूर है कि उस ने इन तीन अस्मा के ज़रीये अपने ज़हूर का ऐलान किया है ताकि इंसान के फ़िये का इलाही इंतिज़ाम आशकारा हो जाये।

ब - खुदा की अबुव्यत

मसीह की उलूहियत पर गौर करने से पहले आईए हम उन बयानात और मशहूर ऐलानात को पढ़ें जो किताब-ए-मुकद्दस (बाइबिल) में मसीह के ताल्लुक से खुदा की अबुव्वत के बारे में हैं।

इन्जील मुकद्दस लूका 1: 31,32 में हम पढ़ते हैं कि खुदा तआला के फ़रिश्ते ने मुकद्दसा मर्यम से कहा “देख तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा। उस का नाम येसू रखना। वो बुजुर्ग होगा और खुदा तआला का बेटा कहलाएगा।”

जब येसू की पैदाईश हुई तो यसअयाह नबी की नबुव्वत पूरी हुई “देखो एक कुंवारी हामिला होगी और बेटा पैदा होगा और वो उस का नाम इम्मानुएल (खुदा हमारे साथ) रखेगी।” (यसअयाह 7:14, मत्ती 1:23 (

फिर हम येसू के बपतिस्मा के वक़्त के बारे में पढ़ते हैं कि “और येसू बपतिस्मा लेकर फ़ील-फ़ौर पानी के पास से ऊपर गया और देखो उसके लिए आस्मान खुल गया और उस ने खुदा के रूह को कबूतर की मानिंद उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और आस्मान से ये आवाज़ आई कि ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।” (मत्ती 3:16-17)

मज़ीद बरआँ हम पढ़ते हैं कि जब येसू पहाड़ पर अपने तीन शागिर्दों के साथ थे तो आपने मूसा और एलियाह से कलाम किया और अभी मसरूफ़ तकल्लुम ही थे कि “एक नूरानी बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई कि ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ उस की सुनो।” (मत्ती 17:5)

ज - मसीह के बयान

आईए अब उन ऐलानों को देखें जो मसीह ने खुद अपनी तरफ़ किए हैं।

मसीह ने अपनी एक तम्सील में बयान किया है कि “अंगूर का हकीकी दरख्त मैं हूँ और मेरा बाप बाग़बान है।” (यूहन्ना 15:1)

फिर यूहन्ना 10:27-29 में लिखा है कि “मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ और वो मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें हमेशा की ज़िंदगी बख़्शता

हूँ और वो अबद तक कभी हलाक ना होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन ना लेगा कोई उन्हें बाप के हाथ से नहीं छीन सकता।□

फिर अपने अलविदाई पैगाम में मसीह ने फ़रमाया “मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखता है ये काम जो मैं करता हूँ वो भी करेगा बल्कि इन से भी बड़े काम करेगा क्योंकि मैं बाप के पास जाता हूँ। और जो कुछ तुम मेरे नाम से चाहोगे मैं वही करूंगा ताकि बाप बेटे में जलाल पाए।” (यूहन्ना 14:13,12)

एक मौके पर यहूदी लोग फ़ख्रिया कहने लगे कि मूसा ने तो उन्हें मन व सलवा ब्याबान में दिया था तो मसीह ने उन्हें फ़रमाया “मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि मूसा ने तो वो रोटी आस्मान से तुम्हें ना दी लेकिन मेरा बाप तुम्हें आस्मान से हकीकी रोटी देता है।” (यूहन्ना 6:32)

एक और मौके पर दूसरे लोगों से मसीह ने फ़रमाया “मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि बेटा आपसे कुछ नहीं कर सकता सिवा उस के जो बाप को करते देखता है क्योंकि जिन कामों को वो करता है उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है। इसलिए कि बाप बेटे को अज़ीज़ रखता है और जितने काम खुद करता है उसे दिखाता है.... जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और ज़िंदा करता है उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा करता है। क्योंकि बाप किसी की अदालत भी नहीं करता बल्कि उस ने अदालत का सारा काम बेटे के सपुर्द किया है। ताकि सब लोग बेटे की इज़्जत करें जिस तरह बाप की इज़्जत करते हैं।... मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि वो वक्त आता है बल्कि अभी है कि मुर्दे खुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएँगे।” (यूहन्ना 5:19-25)

बादअज़ां लोगों को तालीम देते हुए आपने फ़रमाया “मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि जो कोई गुनाह करता है गुनाह का गुलाम है। और गुलाम अबद तक घर में नहीं रहता बेटा अबद तक रहता है। पस अगर बेटा तुम्हें आज़ाद करेगा तो तुम वाकई आज़ाद होगे।” (यूहन्ना 8:34-36)

लोगों से गुफ्तगु करते हुए एक बार आपने फ़रमाया “मेरा बाप अब तक काम करता है और मैं भी काम करता हूँ। इस सबब से यहूदी और भी ज़्यादा उसे क़त्ल करने की

कोशिश करने लगे कि वो ना फ़क़त सबत का हुक्म तोड़ता है बल्कि खुदा को खास अपना बाप कह कर अपने आपको खुदा के बराबर बनाता है।” (यूहन्ना 5:17-18)

इसी तरह एक मर्तबा अपने सामईन को मुखातिब करते हुए आपने फ़रमाया “मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उस के जिस पर बेटा उसे जाहिर करना चाहे। ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो सब मेरे पास आओ मैं तुमको आराम दूंगा। (मत्ती 11:27-28)

अब इन सारे ऐलानों पर गौर करें तो लगता है कि ना कोई इन्सान, ना कोई नबी और रसूल, ना आस्मान का कोई फ़रिश्ता, ना कोई फ़रिश्तों का सरदार येसू मसीह की अजीब व गरीब शख्सियत के भेद का इदराक करने की अहलीयत रखता है। इसी नुक्ते की तरफ़ यसअयाह नबी ने भी इशारा किया था। इस से इस बात की भी बख़ूबी सराहत हो जाती है कि येसू मसीह की ज़ात व शख्सियत ऐसी ग़ैर-महदूद है कि सिवा बाप के और किसी को मक्दूर (ताक़त) नहीं कि उसे पूरे तौर पर समझ सके। अगर येसू एक आम इंसान होते तो इस किस्म का बयान ना दिया गया होता। बिलाशक व शुब्हा ये अज़ीम ऐलान बाप के साथ उस की वहदत अज़लिया के एतबार से मसीह की रिसालत व ख़िदमत पर दलालत करता है कि वो उस बाप को जो अनदेखा है लोगों पर जाहिर व मुन्कशिफ़ (जाहिर) करे।

ये मुकाशफ़ा जिसका ऐलान मसीह ने किया एक नाकाबिले फ़हम मुअम्मा नज़र आ सकता है, लेकिन रूह-उल-कुद्दुस ने इन्जील यूहन्ना के मुसन्निफ़ को इस का इल्हाम कर दिया ताकि वो आयतों के एक सिलसिले के ज़रीये इस की वज़ाहत कर सके, जिसमें से वाज़ेह तर ये है कि “खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा। इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने जाहिर किया।” (यूहन्ना 1:18) ये आयत हमें यकीन दिलाती है कि ना किसी बशर ने, ना किसी फ़रिश्ते ने ही कभी खुदा को देखा है, ना उस की शायान-ए-शान कमा-हक्का इल्म से जाना है या इदराक किया है यानी उस की इलोही सिफ़ात के साथ कभी किसी ने खुदा को ना देखा ना जाना है और जो कुछ भी मुन्कशिफ़ (जाहिर) हुआ तो वो इल्हाम से या रोया से ही हासिल हुआ है। चुनान्चे ना कभी मूसा ने ना किसी और नबी ने कभी खुदा को देखा है, हाँ जो कुछ खुदा के बारे में माफ़त मिली है वो इल्हाम या रोया

की बदौलत मिली है जिसका जरीया उक़नूम सानी येसू मसीह था क्योंकि तन्हा वही एक ऐसी शख़िसयत है जो ज़ात बारी के अक़ानीम सलसा के अफ़कार को जानता है और आलम के लिए इलाही मक़ासिद का हुक्म रखता है और वही जसद इंसानी में ज़ाहिर हुआ।” (1 तीमुथियुस 3:16 (

जब मसीह ने अपने शागिर्दों को कहा कि मैं और बाप एक ही हैं, जिसने मुझे देखा उस ने बाप को देखा, मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है तो वो उन्हें यक़ीन दिला रहे थे कि उन के और बाप के दर्मियान एक वहदत है कि इरादा व मशीयत में, मुक़ाम व मर्तबत व कुद़रत में और मजद व अज़मत में बाएतबार जोहर वो और बाप एक हैं।

द - रसूलों की गवाही

(1) मसीह के शागिर्द पतरस रसूल ने आपके बारे में उस वक़्त बड़ी साफ़ गवाही दी जब मसीह ने अपने शागिर्दों से पूछा कि “तुम मुझे क्या कहते हो? शमऊन पतरस ने जवाब दिया तू ज़िंदा खुदा का बेटा मसीह है।” (मत्ती 16: 15,16)

(2) मसीह के एक दूसरे शागिर्द यूहन्ना ने आपके बारे में ये शहादत दी “(हम) ये भी जानते हैं कि खुदा का बेटा आ गया है और उस ने हमें समझ बख़शी है ताकि उस को जो हक़ीक़ी है जानें और हम उस में जो हक़ीक़ी है यानी उस के बेटे येसू मसीह में हैं। हक़ीक़ी खुदा और हमेशा की ज़िंदगी यही है।” (1 यूहन्ना 6:20)

(3) मसीह के शागिर्द पौलुस ने ग़लतीयों 4:4 में ये गवाही दी है कि “लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया तो खुदा ने अपने बेटे को भेजा जो औरत से पैदा हुआ और शरीअत के मातहत पैदा हुआ। ताकि शरीअत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ा ले और हमको लेपालक होने का दर्जा मिले।□

ह - अम्बिया की गवाही

(1) हज़रत सुलेमान ने फ़रमाया “कौन आस्मान पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा? किस ने हवा को मुट्ठी में जमा किया? किस ने पानी को चादर में बाँधा? किस ने ज़मीन की हुदूद ठहराई? अगर तू जानता है तो बता उस का नाम क्या है और उस के बेटे का

क्या नाम है? खुदा का हर एक सुखन (कलाम, बात) पाक है। वो उन की सिपर (ढाल) है जिनका तवक्कुल उस पर है।” (अम्साल 30:5,4)

(2) हज़रत दानीएल (दानयाल) ने फ़रमाया “मैंने रात को रोया में देखा और क्या देखता हूँ कि एक शख्स आदमज़ाद की मानिंद आस्मान के बादलों के साथ आया और कदीम-उल-अय्याम (खुदा) तक पहुंचा। वो उसे उस के हुज़ूर लाए। और सल्तनत और हशमत और ममलकत उसे दी गई ताकि सब लोग और उम्मतीं और अहले-लुगत उस की खिदमतगुजारी करें। उस की सल्तनत अबदी सल्तनत है जो जाती ना रहेगी और उस की ममलकत लाज़वाल होगी।” (दानीएल 7:14,13)

(3) हज़रत यहया (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले) ने फ़रमाया “तुम खुद मेरे गवाह हो कि मैंने कहा मैं मसीह नहीं मगर उस के आगे भेजा गया हूँ।.... जो ऊपर से आता है वो सबसे ऊपर है।.... जो कुछ उस ने देखा और सुना उसी की गवाही देता है और कोई उस की गवाही कुबूल नहीं करता।.... बाप बेटे से मुहब्बत रखता है और उस ने सब चीज़ें उस के हाथ में दे दी हैं। जो बेटे पर ईमान लाता है हमेशा की ज़िंदगी उस की है लेकिन जो बेटे की नहीं मानता ज़िंदगी को ना देखेगा बल्कि उस पर खुदा का गज़ब रहता है।” (यूहन्ना 3:28-36)

ये सारी आयतें पेश करने के बाद ये बता देना ज़रूरी है कि मसीह को जो खुदा का बेटा कहा गया है वो ज़ात-ए-इलाही के उक़नूम सानी होने की हैसियत से कहा गया है। चुनान्चे लफ़ज़ बाप और बेटा मसीही अक़ीदे में इस किस्म के तसव्वुर से जो इंसान के हॉ बाप बेटे का है कोई इलाका नहीं रखते।

किताब-ए-मुक़द्दस बाइबिल में अल-इब्न (बेटा) अल-कलमा को कहा गया है जो नादीदा खुदा की सूरत है, उस के जलाल का पर्तो और उस की ज़ात का नक़्श और इम्मानुएल (खुदा हमारे साथ) है। इस सबसे लफ़ज़ इब्न का इज़हार होता है। बिल्कुल जिस तरह कलमा (बात) ज़हन के खयालात की वज़ाहत का वसीला होता है और जो कुछ अक़ल में है उस का ज़ाहिरी तौर पर ऐलान करता है इसी तरह जब कलमे ने जिस्म इख़्तियार किया तो उस ने खुदा और उस के खयालात को इंसानियत पर ज़ाहिर किया। जिस तरह नक़्श किसी हईयत व सूरत की तर्जुमानी करता है उसी तरह येसू मसीह खुदा तआला की तर्जुमानी करते हैं, जिस तरह सूरज की रोशनी जो कि खुद सूरज का जोहर ही होती है उस

की शान व शौकत को जाहिर करती है इसी तरह येसू के जरीये खुदा के मजद व इज्जत, शान व जलाल और उलूहियत की रुहानी माहीयत (असलियत) की शान व अजमत जाहिर होती है। बस हुआ ये है कि उस ने अपनी मुहब्बत की ज्यादती के बाइस उसे बदन की चादर में लपेट कर छिपा दिया है, और वो हमारी दुनिया में रहा ताकि हम खुदा को देख और सुन सकें।

अब तक जो कुछ कहा गया है इस से ये मालूम हुआ कि अल-इब्न (बेटा) वो हस्ती है जिसने उलूहियत को जाहिर किया और वो इंसानों पर खुदा-ए-नादीदा को मुन्कशिफ़ (जाहिर) करने का भी जरीया था। इसी तरह रूह-उल-कुद्दुस जो उकनूम सालिसा है इंसान के जमीर तक खुदा की आवाज़ पहुंचाने का जरीया है, क्योंकि हम रूह-उल-कुद्दुस के काम के बगैर मुकाशफ़ा की हकीकती नौईय्यत को समझ नहीं सकते, जो ऐलानात इलाहिया के इसरार व गवामिज़ को इंसान पर जाहिर करता है और उस के इदराक की तरफ़ राहनुमाई करता है। इसी हकीकत को जान लेने के बाद पौलुस रसूल ने ये कहा कि “ना कोई रूह-उल-कुद्दुस के बगैर कह सकता है कि येसू खुदावंद है।” (1 कुरिन्थियों 12:3 (

इस का बड़ा इम्कान रहता है कि लफ़ज़ “बेटा” (इब्न) कुछ लोगों के दिमाग में इज्जतिराब व बेचैनी का बाइस बन जाये, क्योंकि वो लफ़ज़ “बाप” के साथ उस के ताल्लुक से फ़ौरन तसव्वुर करते हैं कि बाप तो ज़मानी लिहाज़ से बेटे से पहले होता है, इसलिए दोनों हस्तीयों में ज़माना और फ़र्क़ मुरातिब की वजह से बड़ा फ़र्क़ पड़ना ज़रूरी है। लेकिन इस मुक़ाम पर हम ये बताते चलें कि लफ़ज़ बेटा बावजाह मज़ाफ़िन होने के किसी तरह भी ना कम होता है ना ज़्यादा यानी अदम मुसावात और तकदीम के माअने की तरफ़ इशारा ही नहीं करता, क्योंकि लफ़ज़ बाप का जब खुदा पर इतलाक़ किया जाये तो ये उस वक़्त तक बे माअना होगा जब तक एक बेटा ना पाया जाये, और लफ़ज़ बेटा भी इसी तरह बाप के वजूद का मुहताज होता है। किताब-ए-मुक़द्दस की तालीम यही है कि अज़ल से बाप है और बाप का लक़ब खुद ही बिल-ज़रूर अज़ल से ही इब्न का वजूद चाहेगा और शायद इसी खयाल ने मुसावात व बराबरी के मौजू पर अक़ली परागंदगी को जन्म दिया है और ये परागंदगी उमूमन ज़हन इंसानी को लाहक़ होती है और उन्हें बाप के वजूद की सबक़त की तरफ़ ले जाती है और दोनों (बाप बेटे) की हस्तीयों के दर्मियान फ़ारिक़ ज़िमनी के तसव्वुर की बुनियाद डालती है। लेकिन हकीकती ताबीर यही है कि बिला तक़दुम व ताख़्खुर उस वक़्त तक बाप का वजूद नहीं जब तक कि बेटा ना हो, इसलिए खुदा तआला और उस

के बेटे मसीह के साथ जमाने के फ़र्क को मन्सूब करना महज़ एक ख्याली और मौहूमी बात है खुसूसुन उस वक़्त तो और भी जबकि उस के साथ ये भी जोड़ दिया जाये कि अल्लाह तो वो ज़ात है जो ना जन्मा गया ना जन्म देता है (आम लोग दुनिया में विलादत के माअने यही लेते हैं कि जन्म होना नर व मादा के इखतिलात से है) लेकिन जन्म की निस्बत खुदा की तरफ़ करना बड़ी नीच सी बात है, इस खयाल से हर मसीही पनाह मांगता है और उसे कुफ़्र मान कर रद्द करता है। हाँ रूहानी विलादत की निस्बत खुदा तआला की तरफ़ करना अक़ल से ज़्यादा करीब है।

हम ऐसी ताबीरों, इबारतों और अल्फ़ाज़ का बकस्रत इस्तिमाल करते हैं जैसे इब्न-उल-हक़ (सच्चाई का बेटा) या इब्न-उल-नूर (नूर का बेटा), जो कि इस खयाल की तर्जुमानी करते हैं कि इन के और सच्चाई और नूर के दर्मियान तमासुल ताम है। इसी माअना में मसीह भी इब्ने-अल्लाह (खुदा के बेटे) कहे गए हैं क्योंकि खुदा में और बेटे में एक मुकम्मल मुमासिलत है और बाहमी मुशाबहत व रिफ़ाक़त है, मसीह को ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि वो खुदा की शख़्सियत के एक अज़ली, मुकम्मल और वाहिद मुकाशफ़ा हैं, जैसा कि हम इब्रानियों के ख़त 1:1-2 में भी पढ़ते हैं कि “अगले जमाने में खुदा ने बाप दादा से हिस्सा ब हिस्सा और तरह ब तरह नबियों की मार्फ़त कलाम कर के इस जमाने के आख़िर में हमसे बेटे की मार्फ़त कलाम किया जिसे उस ने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उस ने आलम भी पैदा किए।”

8 - मसीह की उल्हियत और इंसानियत

“लोग मुझे क्या कहते हैं?” ये एक सवाल है जो मसीह ने दो हज़ार साल पहले अपने शागिर्दों के सामने रखा था। ये एक इतिहाई अहम सवाल है जिसकी सदाए बाज़ग़शत तब से आज तक आलम में गूँज रही है और आज भी ये हर शख़्स से पूछा जा रहा है। शायद इस सवाल से ज़्यादा अहम और बड़ा सवाल तारीख़ में कभी पूछा ही नहीं गया। इस की एहमीय्यत इसलिए है कि इस सवाल में सारी इंसानियत से ताल्लुक़ रखने वाला मसअला निहां है। ये सवाल जब तक दुनिया कायम है जूँ का तूँ बना रहेगा। मज़ाहिब व एतिक़ाद के बीच इस सवाल ने एक ख़त-ए-फ़ासिल खींच दिया है, इसी के जवाब पर हर शख़्स का अंजाम मुन्हसिर है।

मसीहियत की ये भी एक ख़ुसूसीयत है कि जो कुछ सय्यदना मसीह के बारे में कहा जाता है ये उस से ख़ौफ़ज़दा नहीं। मसीह ने खुद ही इस मज़हब की तामीर उस कुच्चत पर की है जिस पर जहन्नम के दरवाज़े कभी ग़ालिब नहीं आ सकते। मसीह ने खुद आज़ादी राय को बढ़ाया और सराहा है, और कहीं पर भी ऐसा नज़र नहीं आता कि आपने ज़बरदस्ती किसी बात को किसी पर थोपा हो। मसीहियत की तारीख़ के किसी भी दौर में मसीह की ज़ात व शख़्सियत के बारे में कभी तल्वार का इस्तिमाल नहीं किया गया है बल्कि उस ईमान को एहमीय्यत दी गई है जो यकीन-ए-कामिल पर कायम हो और जिसे दिल व दिमाग़ दोनों तस्लीम करें। इसी बुनियाद पर हम भी ये कहते हैं कि लोग मसीह की उलूहियत को ज़बरदस्ती क्यों मंज़ूर करें? या ऐसी राय पेश की ही क्यों जाये और लोग ऐसे अटल हो जाएं कि अगर कोई उस के खिलाफ़ कभी कुछ कह भी दे तो गेयज़ (गुस्सा) व ग़ज़ब में आ जाएं। इसलिए हम वो तमाम मुख्तलिफ़ आरा कारईन के सामने पेश करते हैं जो मसीह के बारे में रखी गई हैं।

अलिफ़ - मसीह में सिर्फ़ कामिल उलूहियत थी

गिनास्ती फ़िर्के ने आम मसीहियों के अक़ीदे के खिलाफ़ ये माना कि मसीह सिर्फ़ एक इलोही वजूद थे। ये लोग अक़ीदा तजस्सुम के भी काइल ना थे, जबकि आम मसीही ये मानते हैं कि मसीह में उलूहियत भी थी और इंसानियत भी, लेकिन गिनास्ती लोगों ने उन की इंसानियत का इन्कार किया। उन लोगों का कहना था कि मसीह इंसान की शक़ल में तो ज़रूर ज़ाहिर हुए लेकिन वो इंसानी जिस्म कोई हकीकी जिस्म ना था, ना ही उन की विलादत हुई, ना उन्होंने ने दुख उठाया, और ना हकीकी मौत का मज़ा चखा क्योंकि जो जिस्म उन के साथ नज़र आ रहा था वो अस्ल में एक जुल या छाया था। फिर बाद में इस फ़िर्के में एक और जमाअत पैदा हुई जिसने ये माना कि मसीह का बदन इंसानों के बदन की तरह माद्दी ना था बल्कि वो एक ख़ास आस्मानी जोहर था।

ताहम ये राय ख़ुदा के इल्हामी कलाम की सच्चाई की रोशनी में बातिल ठहरती है क्योंकि हम 1 यूहन्ना 4:1-3 में पढ़ते हैं कि :-

“ऐ अज़ीज़ो हर एक रूह का यकीन ना करो बल्कि रूहों को आजमाओ कि वो ख़ुदा की तरफ़ से हैं या नहीं क्योंकि बहुत से झूटे नबी दुनिया में निकल खड़े हुए हैं। ख़ुदा के

रूह को तुम इस तरह पहचान सकते हो कि जो कोई रूह इकरार करे कि येसू मसीह मुजस्सम हो कर आया है वो खुदा की तरफ से है। और जो कोई रूह येसू का इकरार ना करे वो खुदा की तरफ से नहीं और यही मुखालिफ़-ए-मसीह की रूह है जिसकी खबर तुम सुन चुके हो कि वो आने वाली है बल्कि अब भी दुनिया में मौजूद है।□

ब - मसीह सिर्फ इंसान थे

ये अक्रीदा भी गिनास्ती अक्रीदे से कम ताज्जुब खेज नहीं क्योंकि इस खयाल के पैरों (मानने वाले) मसीह में उलूहियत को नहीं मानते और सिर्फ उन की इंसानियत पर यक्रीन करते हैं। वो कहते हैं कि मसीह एक कामिल तरीन इंसान थे, यानी ज़मीन पर पाए जाने वाले सारे लोगों में से सबसे आला इंसान थे। इसलिए उन की अज़मत व बुजुर्गी को एक अज़ीम रहनुमा और सूरमा और शहीद के तौर पर मानना चाहिए। ग़ालिबन इस का सबसे उम्दा जवाब वो है जो डाक्टर कोनराड ने दिया है कि “जो लोग इस नतीजे पर पहुंचे हैं बड़ी गलती पर हैं क्योंकि उन के लिए मसीह को कोई रहनुमा या हीरो मानना मुश्किल है, वजह ये है कि जो कुछ खुद मसीह ने अपने बारे में कहा है उसी को उन लोगों ने रद्द कर दिया है ऐसी हालत में मसीह की दो ही हैसियतें हो सकती थीं यानी या तो वो खुद सबसे बड़े धोका बाज़ थे और या वो खुद धोके में थे, और इन सूरतों में वो खुद एक बड़ी काबिल-ए-रहम हस्ती हुए, फिर उन्हें इज़्जत व शर्फ देना बेवकूफी है। हकीकत में बात तो ये है कि अगर मसीह काबिल-ए-परस्तिश नहीं तो उन्हें इज़्जत का कोई मुकाम देने की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि जिस चीज़ के मुतकाज़ी थे यानी इबादत व जलाल वो तो उन्हें दिया ही नहीं जा सका।□

ज - मसीह की शख़्सियत में उलूहियत और इंसानियत की यगानगत

ये वो राय है जो मसीही उम्मत या कलीसिया में शुरू से राइज है, इसलिए इसे कबूलीयत आम हासिल है और इसी की मुनादी व बशारत की जाती है। इस राय का खुलासा ये है कि मसीह में दो कामिल तबीयतें थीं, क्योंकि वो कामिल खुदा और कामिल इन्सान है।

शायद पूछने वाला पूछ बैठे कि आखिर कलीसियाई काउंसिलों और लोगों के सामने आखिर वो क्या मजबूरी थी जिसने उलूहियत मसीह को तस्लीम करने पर आमादा किया? और ये एतिकाद ऐसा जड़ पकड़ गया कि लातादाद इंसानों ने इस की हिफ़ाज़त में अपनी जान-ए-अज़ीज़ को दाओ पर लगा दिया और शहादत हासिल की? क्यों इस एतिकाद के मानने वालों में बड़े बड़े मुफ़क्किरीन थे जो हर ज़माने में रहे हैं, और आखिर उन के पास ऐसी कौन सी हुज्जत और दलील कातेअ थी जिस पर उनका तकिया था?

ऐसे सवालात के जवाबात देने ज़रूरी हैं। आईए वो सबूत देखें :-

(1) नबुव्वतों पर मबनी सबूत

आगाज़-ए-तारीख से किताब-ए-मुकद्दस की आखिरी किताब के करीबन चार हजार साल के दर्मियानी अर्से में हमें नबुव्वतों और पेशीनगोइयों की मुतवातिर और मुसलसल कड़ियाँ नज़र आती हैं। इन पेशीनगोइयों को मसीहियों की ईजाद कह कर टाल देना इतना आसान नहीं है क्योंकि मसीहियत के जन्म लेने से बहुत पहले ये नबुव्वतें इल्हामी किताबों के तूमारों पर लिखी थीं। इन में से आखिरी किताब का ताल्लुक तकरीबन मसीह की आमद से चार सौ (400) साल पहले के अर्से से है। इन नबुव्वतों का खुलासा ये है कि आस्मान से इंसानी सूरत में एक इलाही शख्स जाहिर होगा ताकि दुनिया का नजात देने वाला बन सके। ये हस्ती इब्राहिम की नस्ल से और औरत के पेट से जन्म लेगी, यहां तक कह दिया गया कि वो यहूदाह के कबीले और दाऊद के घराने से होगा। एक कुँवारी से पैदा होगा जिसमें किसी क्रिस्म का ऐब या गंदगी ना होगी, और वो शहर बैत-लहम यानी दाऊद के शहर में पैदा होगा। इस के साथ ये भी बताया गया कि वो हस्ती खुदा-ए-कादिर अबदी व सरमदी होगी। अब देखिए ये बातें उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक तजस्सुम वाक़ेअ ना हो और लाहूत नासूत को लपेट में ना ले और उनका इतिहाद अमल में ना आए। इन बातों की ताईद करने वाली आयतें ये हैं :-

“हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हमको एक बेटा बख़शा गया और सलतनत उस के कंधे पर होगी और उस का नाम अजीब मुशीर खुदा-ए-कादिर अबदीयत का बाप सलामती का शाहज़ादा होगा।” (यसअयाह 6:9)

“खुदावंद आप तुमको एक निशान बख्शेगा। देखो एक कुंवारी हामिला होगी और बेटा पैदा होगा और वो उस का नाम इम्मानुएल रखेगी।” (यसअयाह 7:14)

मती 1:23 में बताया गया है कि इम्मानुएल का मतलब है “खुदा हमारे साथ।”

“यहोवा ने मेरे खुदावंद से कहा तू मेरे दहने हाथ बैठ जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाओं की चौकी ना कर दूं।” (जबूर 110:1)

ये इबारत बड़ी एहमीयत की हामिल है जिसकी तफ़्सीर हमें सिवाए ईमान के और कोई नहीं मिल सकती कि ये माना जाये कि ये बाप और बेटे के दर्मियान एक मुकालमा है और इस में मुतकल्लिम खुद खुदा है।

“लेकिन ऐ बैत-लहम इफराताह अगरचे तू यहूदाह के हजारों में शामिल होने के लिए छोटा है तो भी तुझमें से एक शख्स निकलेगा और मेरे हुज़ूर इस्राईल का हाकिम होगा और उस का मुसद्दिर ज़माना साबिक हॉ कदीम-उल-अय्याम से है।” (मीकाह 5:2)

(2) मसीह के अक्वाल पर मबनी सबूत

सिपरजिन नाम के एक मर्द-ए-खुदा जो एक मशहूर वाइज़ थे फ़र्माते हैं कि “मसीह दुनिया की तारीख में ऐसी मर्कज़ी हकीकत हैं कि तारीख के सारे फ़ैज़ान और बहाओ आप ही के दस्त-ए-कुद्वत के तहत हो कर बहते हैं और ज़िंदगी के सारे अज़ीम मकासिद उन की शख्सियत ही में आकर मुकम्मल होते हैं।”

इस पर मुस्तज़ाद ये कि आपके सारे मोअजज़ात, हैरत-अंगेज़ काम, आपके बोले हुए अल्फ़ाज़ की तस्दीक करते और गवाह बनते नज़र आते हैं। मसीह ने बीसियों हकाइक अपने बारे में बताए हैं जो सिवाए खुदा के किसी और के साथ मन्सूब किए ही नहीं जा सकते। कुछ अहम हकाइक ये हैं :-

अलिफ़ - आपका अज़ली वजूद

गालिबन आपकी ज़बान मुबारका से निकला हुआ वो जुम्ला बड़ी एहमीयत का हामिल है जो आपने यहूदी मज़हबी रहनुमाओं के सामने फ़रमाया था :-

“मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि पेशतर इस से कि अब्रहाम पैदा हुवा मैं हूँ। (यूहन्ना 8:58)

“मैं हूँ” वही अल्फाज़ हैं जो खुदा ने खुद अपने लिए और अपनी ज्ञात के लिए उस वक़्त फ़रमाए जब मूसा नबी ने उन से पूछा था कि “जब मैं बनी-इस्राईल के पास जा कर उन को कहूँ कि तुम्हारे बाप दादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वो मुझे कहें कि उस का नाम क्या है? तो मैं उन को क्या बताऊँ? खुदा ने मूसा से कहा मैं जो हूँ सो मैं हूँ। सो तू बनी-इस्राईल से यूँ कहना कि मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” (खुरूज 3:14,13)

इस से मालूम होता है कि मसीह ने अपनी ज्ञात में उसी खुदा को ज़ाहिर किया जो हज़रत मूसा पर कोह होरेब पर जलती झाड़ी में ज़ाहिर हुआ था।

इन्जील मुक़द्दस यूहन्ना 17:5 में ये लिखा है कि मसीह ने अपनी शिफ़ाअती दुआ में कहा : “और अब ऐ बाप तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाईश से पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना दे।”

और फिर आयत 24 में लिखा है कि “ऐ बाप मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है जहां मैं हूँ वो भी तेरे साथ हों ताकि मेरे उस जलाल को देखें जो तू ने मुझे दिया है क्योंकि तू ने बिना-ए-आलम से पेशतर मुझसे मुहब्बत रखी।”

ये अल्फाज़ मसीह के अज़ली वजूद का यकीन दिलाते हैं और मसीह को हादिस या नोपिद अब कौन सी ज़बान कह सकती है।

ब - आपका आस्मान से आना

यहूदीयों के साथ एक और गुफ्तगु के दौरान मसीह ने कहा “तुम नीचे के हो। मैं ऊपर का हूँ। तुम दुनिया के हो। मैं दुनिया का नहीं हूँ।” (यूहन्ना 8:23)

फिर निकुदेमुस नाम एक यहूदी मज़हबी रहनुमा से दौरान-ए-गुफ्तगु मसीह ने फ़रमाया “आस्मान पर कोई नहीं चढ़ा सिवा उस के जो आस्मान से उतरा यानी इब्ने आदम (खुद मसीह) जो आस्मान में है।” (यूहन्ना 3:13 (

मज़ीद बरआँ मुकाशफ़ा 22:13 में हम पढ़ते हैं कि “मैं अल्फ़ा और ओमेगा, अद्वय व आख़िर, इब्तिदा व इंतिहा हूँ।”

यहां हम देखते हैं कि मसीह ने आस्मान से ना सिर्फ़ अपनी आमद के बारे में बताया है बल्कि ये भी कि उनका वजूद और हुजूरी आस्मान में उस वक़्त भी बरकरार थी जब वो इस रूए-ज़मीन पर मौजूद थे।”

ज - आपकी तमाम जगहों और तमाम ज़मानों में मौजूदगी

मत्ती 18:20 में आया है कि “जहां दो या तीन मेरे नाम पर इखट्ठे हैं वहां मैं उन के बीच में हूँ।”

और मसीह ने अपने जी उठने के बाद अपने शागिर्दों को ये हुक्म दिया कि “पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह-उल-कुद्दुस के नाम से बपतिस्मा दो। और उन को ये तालीम दो कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुमको हुक्म दिया और देखो मैं दुनिया के आख़िर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।” (मत्ती 28:19-20)

द - आपका ग़ैर-महदूद इख़्तियार

मसीह जब पतमस के जज़ीरे में यूहन्ना पर रोया में ज़ाहिर हुए तो कहा “खुदावंद खुदा जो है और जो था और जो आने वाला है यानी क़ादिर मुतलक फ़रमाता है कि मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ।” (मुकाशफ़ा 1:8)

(3) मसीह के अलक़ाबात और इलाही अफ़आल पर मबनी सबूत

अलिफ़ - आप का ख़ालिक़ होना

मुन्दरिजा ज़ैल आयात इस हकीक़त को वाज़ेह करती हैं

“सब चीज़ें उस के वसीले से पैदा हुईं और जो कुछ पैदा हुआ है उस में से कोई चीज़ भी उस के बगैर पैदा नहीं हुई। उस में ज़िंदगी थी और वो ज़िंदगी आदमीयों का नूर थी। (यूहन्ना 1:4,3)

“क्योंकि उसी में सब चीज़ें पैदा की गईं। आस्मान की हों या ज़मीन की। देखी हों या अनदेखी। तख़्त हों या रियासतें या हुकूमतें या इख़्तियारात। सब चीज़ें उसी के वसीले से और उसी के वास्ते पैदा हुई हैं। (कुलस्सियों 1:16)

“सब पर ये बात रोशन करो कि जो भेद अज़ल से सब चीज़ों के पैदा करने वाले खुदा में पोशीदा रहा उसका क्या इतिज़ाम है। (इफ़िसियों 3:9)

ब - आपका मुर्दों को ज़िंदा कर देना

“जब वो (येसू) शहर के फाटक के नज़दीक पहुंचा तो देखो एक मुर्दे को बाहर लिए जाते थे। वो अपनी माँ का इकलौता बेटा था और वो बेवा थी और शहर के बहुतेरे लोग उसके साथ थे। उसे देखकर खुदावंद (मसीह) को तरस आया और उस से कहा मत रो। फिर उस ने पास आकर जनाज़े को छुवा और उठाने वाले खड़े हो गए और उस (मसीह) ने कहा, ऐ जवान मैं तुझसे कहता हूँ उठ (कुम) वो मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा और उस ने उसे उस की माँ को सौंप दिया। (लूका 7:12-15)

“उस ने बुलंद आवाज़ से पुकारा कि ऐ लाज़िर निकल आ! जो मर गया था वो कफ़न से हाथ पाओं बंधे हुए निकल आया और उसका चेहरा रूमाल से लिपटा हुआ था। येसू ने उन से कहा उसे खोल कर जाने दो।” (यूहन्ना 11:44,43)

ज - आप मुंसिफ़ आलिम होंगे

“जब इब्ने-आदम अपने जलाल में आएगा और सब फ़रिश्ते उस के साथ आएँगे तब वो अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा और सब कौमें उस के सामने जमा की जाएँगी और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरीयों से जुदा करता है। (मत्ती 25:32,31)

“बाप किसी की अदालत भी नहीं करता बल्कि उस ने अदालत का सारा काम बेटे के सपुर्द किया है। (यूहन्ना 22:5)

द - आप लायक परस्तिश हैं

“ताकि सब लोग बेटे की इज्जत करें जिस तरह बाप की इज्जत करते हैं। जो बेटे की इज्जत नहीं करता वो बाप की जिसने उसे भेजा इज्जत नहीं करता। (यूहन्ना 5:23)

याद रहे बाप के साथ बेटे की इबादत व परस्तिश मर्दान-ए-खुदा के बीच अह्दे-अतीक के जमाने में भी राइज थी। मसलन दाऊद नबी ने कहा “डरते हुए खुदावंद की इबादत करो। काँपते हुए खुशी मनाओ बेटे को चूमो। ऐसा ना हो कि वो कहर में आए और तुम रास्ते में हलाक हो जाओ क्योंकि उस का गजब जल्द भड़कने को है। मुबारक हैं वो सब जिनका तवक्कुल उस पर है।” (जबूर 2:12,11)

ह - आप गाफिर-उल-जुनुब हैं (गुनाह बख्शते हैं)

यहूदी हमेशा ये मानते थे कि गुनाहों की माफ़ी का इख्तियार सिर्फ़ खुदा ही को है और जब उन्होंने ने मसीह को एक मोअजिजा करते वक़्त मफ़लूज को ये खिताब करते सुना कि “बेटा तेरे गुनाह माफ़ हुए।” (मर्कुस 2:5) यहूदी आपके इस अमल व सुलूक से निहायत ही मुज्तरिब व परेशान हो रहे थे तो मसीह ने फ़रमाया “तुम क्यों अपने दिलों में ये बातें सोचते हो? आसान क्या है? मफ़लूज से ये कहना कि तेरे गुनाह माफ़ हुए या ये कहना कि उठ और अपनी चारपाई उठा कर चल फिर? लेकिन इसलिए कि तुम जानो कि इब्ने-आदम को ज़मीन पर गुनाह माफ़ करने का इख्तियार है। (उस ने उस मफ़लूज से कहा) मैं तुझसे कहता हूँ उठ अपनी चारपाई उठा कर अपने घर चला जा। और वो उठा और फ़ील-फ़ौर चारपाई उठा कर उन सब के सामने बाहर चला गया। चुनान्चे वो सब हैरान हो गए और खुदा की तम्जीद कर के कहने लगे हमने ऐसा कभी नहीं देखा था।” (मर्कुस 2:8-12 (

व - आप हयात-ए-अबदी बख्शते हैं

आपने फ़रमाया “मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ और वो मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें हमेशा की ज़िंदगी बख़्शता हूँ और वो अबद तक कभी हलाक ना होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन ना लेगा।” (यूहन्ना 10:27-28)

ज - आप बाप के मुसावी (बराबर) हैं

आपने फ़रमाया :-

“मैं और बाप एक हैं।” (यूहन्ना 10:30)

“जिसने मुझे देखा उस ने बाप को देखा। तू क्योंकर कहता है कि बाप को हमें दिखा? क्या तू यकीन नहीं करता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूँ अपनी तरफ़ से नहीं कहता लेकिन बाप मुझमें रह कर अपने काम करता है। मेरा यकीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें। नहीं तो मेरे कामों ही के सबब से मेरा यकीन करो।” (यूहन्ना 14:8-11)

ह - आपने सुजूद व तअब्बुद (इबादत) कुबूल किया

इस में तो शक ही नहीं कि येसू ने परस्तिश व सज्दे को कुबूल किया जो किसी भी बशर (इंसान) के लिए जायज़ नहीं। ये बात उस वक़्त वाक़ेअ हुई जब एक जन्म के अंधे से जनाब मसीह ने पूछा “क्या तू खुदा के बेटे पर ईमान लाता है? उस ने जवाब में कहा ऐ खुदावंद वो कौन है कि मैं उस पर ईमान लाऊँ? येसू ने उस से कहा तू ने तो उसे देखा है और जो तुझसे बातें करता है वही है। उस ने कहा ऐ खुदावंद मैं ईमान लाता हूँ और उसे सज्दा किया।” (यूहन्ना 9:35-38)

(4) मसीह के शागिर्दों की गवाही पर मबनी सबूत

ये गवाही उन लोगों की है जिन्होंने मसीह की अज़मत और शान को ऐलानीया तौर पर देखा। ये सारी शहादतें (गवाहियाँ) मुकम्मल और सारे शकूक से पाक हैं। मसलन कुछ आपके सामने पेश की जा रही हैं :-

अलिफ़ - तोमा की गवाही

इस शागिर्द (तोमा) ने मसीह के जी उठने के बाद जब उन के हाथों में कीलों से छेदे जाने के निशान देखे और पहलू पर उस जख्म को देखा जिसे छेदा गया था तो ईमान लाया और पुकार उठा “ऐ मेरे खुदावंद ऐ मेरे खुदा!” (यूहन्ना 20:28 (

ब - यूहन्ना की गवाही

इस शागिर्द ने खुदा के इल्हाम से कहा “हम उस में जो हकीक़ी है यानी उस के बेटे येसू मसीह में हैं। हकीक़ी खुदा और हमेशा की ज़िंदगी यही है।” 1) यूहन्ना 5:20 (

ज - पौलुस की गवाही

पौलुस रसूल ने गवाही दी कि : “जिस्म के रू से मसीह भी उन ही में से हुआ जो सब के ऊपर और अबद तक खुदा-ए-महमूद है। आमीन” (रोमीयों 5:9)

9 - अक़्रीदा तस्लीसतौहीद-फ़ील-

मसीहियत का ये मानना है कि खुदा तआला एक रूह है जो माद्री जिस्म नहीं रखता कि जिसे देखा या छुआ जा सके या जो हवास से मालूम किया जा सके, जैसा कि मसीह ने खुद बता दिया है “खुदा रूह है और ज़रूर है कि उस के परस्तार रूह और सच्चाई से परस्तिश करें।” (यूहन्ना 4:24)

एक जगह खुदा को रूहों का बाप भी कहा गया है कि उस ने उन्हें अपनी सूरत और शबिया पर पैदा किया है, जैसा कि हम पढ़ते हैं : “फिर खुदा ने कहा कि हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शबिया की मानिंद बनाएँ।” (पैदाईश 1:26)

खुदा वाहिद है और तीन अक़ानीम बाप, बेटा और रूह-उल-कुदुस का हामिल है।

ईमान के इस रुक्न पर यानी अक्रीदा सालूस पर जब हम गौर करते हैं तो ये एतराफ करना ही पड़ता है कि हम एक ऐसे बड़े राज या भेद से दो-चार हो रहे हैं जो जिंदगी और वजूद के बेहद गहरे भेदों में से एक है।

मुकद्दस अगस्तीन ने भी अपने जमाने में और उस के बाद एक अजीम मुस्लेह (मुजद्दिद, सुधारक) केल्विन ने भी यही माना है कि लातीनी ज़बान गो कि मुफ़रिदात और लुगात के और हुस्न व जमाल के मुआमलात के बयान करने में बड़ी मालदार है फिर भी वो इस भेद की गहराई की ताबीर में पूरे तौर पर लाचार है।

ये बात यक्रीनी और वाज़ेह है कि मसीहियों ने तस्लीस-फ़ील-तौहीद का अक्रीदा किसी इंसान से नहीं सीखा था, ना ही ये किसी इंसानी दिमाग की पैदावार है बल्कि ये वो हकीकत है जिसका खुदावंद तआला की तरफ़ से ऐलान हुआ है और बाइबिल मुकद्दस में शुरू से आखिर तक मिलता है। इस मौजू पर कुछ और लिखने से बेहतर है कि हम वो सब जमा करें जो कलीसिया या मसीही जमाअत का मसीह के बारे में तारीखी हैसियत से अक्रीदा रहा है और अब एक हरफ़-ए-आखिर की सूरत में दुनिया के सामने मौजूद है।

मसीह के शागिर्दों और रसूलों के जमाने में हता कि दूसरी मसीही सदी तक भी मसीहियों ने कोई बंधा टिका मसीही अक्रीदा तशकील नहीं दिया था बल्कि इस तरफ़ ना कभी ध्यान दिया और ना सोचा था क्योंकि वो इस बात से मुत्मइन थे कि सारे लोग उन्ही बातों और तालीम पर कारबन्द हैं जो बाइबिल मुकद्दस में मर्कूम हैं। अगर कभी कोई मसअला दरपेश होता तो वो रसूलों और उन के शागिर्दाने-रशीद की तरफ़ रुजू करते या उन की तरफ़ जो उन के जानशीन थे।

ताहम बाद के दौर में जब कुछ ग़लत-सलत और ग़ैर-मुसल्लिमा तालीम रिवाज पाने लगी तो उस ने इख्तिलाफ़ात को जन्म देना शुरू किया। सबसे अहम नुक्ता जिस पर इख्तिलाफ़ात ने सर उठाना शुरू किया वो “हैसियत-ए-मसीह” या “जात-ए-उल्हियत में से सदूर रूह-उल-कुद्दुस” का मसअला था। ऐसी सूरत-ए-हाल में कलीसिया या उम्मत मसीही ने उन मुबाहिस पर अपने नुक्तहाए नज़र का इज़हार किया। ये इज़हार उस वक़्त तो खासतौर पर किया गया जब सबेलिस और अरुईस की आरा (राय) इतिशार पकड़ने लगीं। सबेलिस ने ये तालीम दी कि खुदा की वहदानियत में कोई सालूस नहीं और रहे ऐसे अल्फ़ाज़ जैसे बाप, बेटा और रूह-उल-कुद्दुस वग़ैरह तो ये सब खुदा के मुख्तलिफ़ मुजाहरात

और तजल्लियात हैं। जबकि अरुईस का मानना ये था कि बाप और बेटे और रूह-उल-कुद्दुस में किसी किस्म की मुसावात या बराबरी नहीं है क्योंकि बेटा और रूह-उल-कुद्दुस दोनों मख्लूक हैं और बाप से कमतर हैं और बाप ने उन दोनों को इलाही फ़ि़त्रत के मुशाबेह बनाया है।

कलीसिया-ए-जामा ने इन खयालात को रद्द किया क्योंकि ये बाइबिल मुक़द्दस के नुसूस और तालीम से मेल नहीं खाते जो वाज़ेह तौर पर सिखाती है कि कभी कोई ऐसा वक़्त नहीं था जब तस्लीस-फ़ील-तौहीद के तीनों अक़ानीम इखट्ठे मौजूद ना थे। बाप बेटे के साथ हमेशा से मौजूद है जैसा कि हम ज़बूर 110:1 में पढ़ते हैं “यहोवा ने मेरे खुदावंद से कहा तू मेरे दहने हाथ बैठ।”

इसी तरह ज़बूर 16:8 को आमाल 2:25 में बेटे के ताल्लुक से बयान किया गया है “मैं खुदावंद को हमेशा अपने सामने देखता रहा। क्योंकि वो मेरी दहनी तरफ़ है ताकि मुझे जुंबिश ना हो।”

मुक़द्दस अथनासीस सिकंदरीया का बिशप उन अज़ीम लोगों में से है जिन्होंने कलीसिया की तरफ़ से बिद्अतों का मुक़ाबला किया और अपने ईमान का दिफ़ा किया, उस ने अथनासीस का अक़ीदा जारी किया जिसके खास अजज़ा ये हैं :-

(1) तालिब-ए-नजात हर चीज़ से पहले मसीही कलीसिया के जामा ईमान का यकीन करे।

(2) वो आलमगीर ईमान जामा ये है कि सालूस में खुदा वाहिद की परस्तिश और तौहीद में सालूस की परस्तिश की जाये।

(3) ना अक़ानीम मखलूत किए जाएं ना जोहर में फ़स्ल पैदा की जाये।

(4) बाप का एक उक़नूम है, बेटे का एक उक़नूम है, रूह-उल-कुद्दुस का एक उक़नूम है। लेकिन बाप बेटा और रूह-उल-कुद्दुस लाहूत वाहिद है यानी वो उलूहियत में वाहिद, मज्द में मुसावी और जलाल व बुजुर्गी में अबदी हैं।

(5) जैसा बाप है, वैसा ही बेटा और वैसा ही रूह-उल-कुद्दुस है।

(6) बाप गैर-मख्लूक, बेटा गैर-मख्लूक, रूह-उल-कुद्दुस गैर-मख्लूक है। लेकिन तीन गैर-मख्लूक हस्तियाँ नहीं बल्कि वाहिद गैर-मख्लूक है।

(7) बाप गैर-महदूद, बेटा गैर-महदूद, रूह-उल-कुद्दुस गैर-महदूद, लेकिन तीन लामहदूद हस्तियाँ नहीं बल्कि वाहिद लामहदूद है।

(8) बाप अज़ली, बेटा अज़ली, रूह-उल-कुद्दुस अज़ली, फिर भी तीन सरमदी व अज़ली हस्तियाँ नहीं बल्कि वाहिद अज़ली हस्ती है।

(9) बाप ने हर शैय को अपने कब्जे कुद्रत में रखा है, बेटा भी ज़ाबित-उल-कुल है और रूह-उल-कुद्दुस भी मुंतज़िम-उल-कुल है, लेकिन तीन ज़ाबित व मुंतज़िम नहीं बल्कि एक ही ज़ाबित-उल-कुल है।

(10) बाप खुदा है, बेटा खुदा है, रूह-उल-कुद्दुस खुदा है लेकिन तीन खुदा नहीं बल्कि एक ही खुदा है।

(11) बाप रब (खुदावंद) है, बेटा रब है, रूह-उल-कुद्दुस रब है लेकिन तीन अर्बाब नहीं बल्कि रब वाहिद है।

(12) मसीही सच्चाई हमें सिखाती है कि हम ये एतराफ़ ना करें कि हर उक़नूम बज़ाते खुदा और रब है, दीन जामा भी हमें मना करता है कि हम तीन खुदाओं और तीन अर्बाब को मानें।

(13) हमारा तो एक ही बाप है, तीन बाप नहीं, एक बेटा है, तीन बेटे नहीं, एक ही रूह-उल-कुद्दुस है, तीन रूह-उल-कुद्दुस नहीं।

(14) इन तीन सालूस में एक भी ऐसा नहीं जो एक दूसरे से बड़ा है या छोटा है बल्कि सारे अक़ानीम साथ-साथ अज़ली हैं और बराबर हैं।

(15) चुनान्चे अब तक जो कुछ कहा गया है इस से ये मुस्तंबित है कि सालूस में वहदानियत की और वहदानियत में सालूस की इबादत की जाये।

(16) सच्चा और सीधा ईमान मसीही ये है कि येसू मसीह बाप के जोहर से कबल-उल-दहर मौलूद है और खुदा है। वो माँ के जोहर से इंसान बना और एक अस्र (दहर या जमाना) में मौलूद है।

(17) गो कि येसू मसीह अल्लाह और इंसान है, फिर भी वो एक ही मसीह है दो नहीं। मसीह जिस्म में उलूहियत को तब्दील कर के इंसान नहीं बना। बल्कि इंसानियत और उलूहियत के इतिहाद व इमतीजाज से इंसान हो गया।

अब कोई ये पूछ सकता है कि इस हकीकत की क्या असास (बुनियाद) है? इस की सेहत व सबात के लिए किया बुरहान है? कैसे ये हकीकत रसूख व इस्तिकरार के इस दर्जे तक पहुंची?

जवाब ये है कि इस हकीकत की वाहिद असास (बुनियाद) किताब-ए-मुकद्दस है। क्योंकि इंसान ख्वाह कितना ही बड़ा और मुफक्किरे आजम ही क्यों ना बन जाये ये उस के बस और इख्तियार में नहीं है कि ज्ञाते इलाही की तबीयत और कुनह को पा सके तावक्ते के खुदा तआला खुद उस पर अपनी ज्ञात को मुन्कशिफ़ (जाहिर) ना कर ले और मार्फ़त व ऐलान ना अता करे। किताब-ए-मुकद्दस से हट कर जो कुछ सालूस के बारे में मिलता है, ख्वाह वो फ़ल्सफ़ियाना तफ़क्कुर से हासिल है या मन्तिकी दलाईल से, वो सबकी सब तश्रीह व कयासी तोज़िहात हैं।

इस में तो गुंजाइश शुब्हा नहीं कि किताब-ए-मुकद्दस के सहाइफ़ ने खुदा की ज्ञात व तबीयत में वहदानियत की ही तालीम दी है, इस मौक्किफ़ पर ना किसी मसीही को इख्तिलाफ़ है ना बहस। लेकिन क्या वो वहदानियत मुजरद व बसीत है? नहीं बल्कि वो वहदानियत कामला व शामला है और इसी बात की तालीम से किताब-ए-मुकद्दस भरी हुई है, अहदे-अतीक भी और अहदे-जदीद भी। यही वहदानियत कामला व शामला है जो सालूस अक्दस की तबीयत और ज्ञात को कमा-हक्का मुन्कशिफ़ (जाहिर) करती है। यही मसीहियों का ईमान है।

बाइबिल मुकद्दस के उलमा ने इसी को माना है और इसी की कलीसियाई कानून में सूरत-गरी की गई है। इन कलीसियाई अक्कीदों में सबसे अहम निकाया का अक्कीदा है जिसका मतन ये है :-

“मैं ईमान रखता हूँ एक खुदा कादिर-ए-मुतलक़ बाप पर जो आस्मान व ज़मीन और सब देखी और अनदेखी चीज़ों का ख़ालिक है।”

“और एक खुदावंद येसू मसीह पर जो खुदा का इकलौता बेटा है। कुल आलमों से पेशतर अपने बाप से मौलूद, खुदा से खुदा, नूर से नूर, हकीकी खुदा से हकीकी खुदा, मसनूअ नहीं बल्कि बाप से मौलूद, उस का और बाप का एक ही जोहर है। उस के वसीले से कुल चीज़ें बनीं। वो हम आदमीयों के लिए और हमारी नजात के वास्ते आस्मान पर से उतर आया। और रूह-उल-कुदुस की कुदरत से कुंवारी मर्यम से मुजस्सम हुआ। और इंसान बना। और पुनतीस पीलातुस के अहद में हमारे लिए मस्लूब भी हुआ। उस ने दुख उठाया और दफ़न हुआ। और तीसरे दिन पाक नविशतों के बमूजब जी उठा। और आस्मान पर चढ़ गया। और बाप के दहने बैठा है। वो जलाल के साथ जिंदों और मुर्दों की अदालत के लिए फिर आएगा। उस की सल्तनत ख़त्म ना होगी।”

“और मैं ईमान रखता हूँ रूहुल-कुदुस पर जो खुदावंद है और जिंदगी बख़शने वाला है। वो बाप और बेटे से सादिर है। उस की बाप और बेटे के साथ परस्तिश व ताज़ीम होती है। वो नबियों की ज़बानी बोला। मैं एक पाक कैथलिक (जामा, आलमगीर) रसूली कलीसिया पर ईमान रखता हूँ। मैं एक बपतिस्मे का जो गुनाहों की माफ़ी के लिए है इकरार करता हूँ। और मुर्दों की क्रियामत और आइंदा ज़हान की हयात का इंतिज़ार करता हूँ। आमीन!□

ये बात सच्च है और किताब-ए-मुक़द्दस ने कहा कि “खुदावंद हमारा खुदा एक ही खुदा है”, “यहोवा (खुदावंद) मैं हूँ। यही मेरा नाम है। मैं अपना जलाल किसी दूसरे के लिए और अपनी हम्द खोदी हुई मूरतों के लिए रवा ना रखूंगा।□

लेकिन ये बात भी अपनी जगह मुसल्लम है कि किताब-ए-मुक़द्दस में बेशुमार ऐसी आयात हैं जो इस बात पर दलालत करती हैं कि खुदा की ज़ात में वहदानियत जामिआ व शामिल है और खुदा तआला कई सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है जैसे समिअ, बसिर, कलाम, इल्म, इरादा और मुहब्बत वगैरह क्योंकि उस ज़ाते बारी का अपनी मख़लूक़ात से रब्त व रिश्ता है जिसे ये सिफ़तें ज़ाहिर करती हैं और ये भी ज़ाहिर है कि ये सिफ़तें कभी भी अज़लियत में मुअत्तल नहीं थीं यानी इस कायनात की तख़लीक़ से पहले भी आमिल थीं। जिससे ये नतीजा निकलता है कि खुदा अपनी सिफ़तों का इस्तिमाल करता रहा है और ये तब ही

मुम्किन हो सकता है जब कबल कायनात कोई और भी शख्सियत हो। अब देखिए यहीं से वहदानियत में अकानीम का वजूद लाज़िम आता है।

और कोई शक नहीं कि जो मसीहियत के अक्रीदे पर गहराई से नज़र करता हो तो उस के सामने ये हक्काइक वाज़ेह होते हैं :-

अलिफ़ - बाप बेटे और रूह-उल-कुद्दुस में से हर उकनूम को इलाही अल्काब व खिताब हासिल हैं और सब काबिल-ए-ताज़ीम और लायक़ इबादत हैं।

ब - किताब-ए-मुकद्दस से बेटे की उलूहियत इसी तरह वाज़ेह है जैसे बाप की उलूहियत, जैसा कि मसीह ने खुद फ़रमाया “ताकि सब लोग बेटे की इज़्जत करें जिस तरह बाप की इज़्जत करते हैं।” (यूहन्ना 5:23)

ज - जिस तरह बाप और बेटे की उलूहियत किताब-ए-मुकद्दस से साबित है, उसी तरह रूह-उल-कुद्दुस की उलूहियत भी साबित है। खुद मसीह ने फ़रमाया कि “खुदा रूह है और ज़रूर है कि उस के परस्तार रूह और सच्चाई से परस्तिश करें।” (यूहन्ना 4:24)

जब हम मसीही अक्रीदे का मुतालआ करते हैं तो देखते हैं कि सालूस अक्दस के नाम यानी बाप, बेटा, और रूह-उल-कुद्दुस खुदा और उस की मख्लूकात के दर्मियान किसी निस्बत मुख्तलिफ़ा से किनाया नहीं है यानी वैसा इम्तियाज़ नहीं है जैसा खालिक, हाफ़िज़ और मुनइम जैसी इस्तिलाहात से होता है। गो कि कुछ लोग ऐसा खयाल करते हैं लेकिन मुन्दरिजा ज़ैल निकात इस को ग़लत साबित करते हैं।

अलिफ़ - बाप, बेटा और रूह-उल-कुद्दुस हर एक अपनी ज़ात के बारे में “मैं” का इस्तिमाल करते हैं।

ब - इन में से हर एक जब दूसरे से खिताब करता है तो गुफ़्तगु में “तू” का और सीगा गायब के तौर पर “वो” का इस्तिमाल करता है।

ज - बाप बेटे से मुहब्बत करता है, बेटा बाप से मुहब्बत करता है और रूह-उल-कुद्दुस बेटे की गवाही देता और उसे जलाल देता है।

इन तमाम हक़ाइक़ और बाइबली सच्चाइयों का नतीजा ये है कि मसीही लोग सारी दुनिया में इसी अक़ीदा तस्लीस-फील-तौहीद को लेकर फैल गए।

कुछ हज़रात ये कह देते हैं कि ये तालीम हमारे इदराक (समझ) से परे है। लेकिन ऐसा बयान मसीही अक़ीदे की तौज़ीह तो नहीं हुआ, बहुत सी साईंस की हक़ीक़तें हमारे इदराक (समझ) से बाहर होते हुए भी जानी और मानी जाती हैं। हमें मानना चाहिए कि हमारे महदूद ज़हन इस तरह ख़ल्क नहीं किए गए जो मुम्किन व लामुम्किन का उन उमूर से मुताल्लिक़ मेयार बन सकें जो हमारे हवास, फ़हम और इदराक से बाहर हैं।

10 - वहदानियत-ए-अक़ानीम

अलिफ़ - अक़ानीम की उल्हियत

किताब-ए-मुकद्दस में जो खुदावंद तआला का इल्हामी कलाम है, ये हक़ाइक़ मिलते हैं :-

(1) बाप के बारे में ये कि खुदा हमारा बाप है।

“अब हमारा खुदावंद येसू मसीह खुद और हमारा बाप खुदा जिसने हमसे मुहब्बत रखी और फ़ज़ल से अबदी तसल्ली और अच्छी उम्मीद बख़शी। (2 थसलुनीकीयों 2:16)

(2) बेटे के बारे में लिखा है :-

“मगर बेटे की बाबत कहता है कि ऐ खुदा तेरा तख़्त अबद-उल-आबाद रहेगा और तेरी बादशाही का असा रास्ती का असा है। (इब्रानियों 1:8)

(3) रूह-उल-कुद्दुस की बाबत कहा गया है :-

“ऐ हननियाह क्यों शैतान ने तेरे दिल में ये बात डाली कि तू रूह-उल-कुद्दुस से झूट बोले.... तू आदमीयों से नहीं बल्कि खुदा से झूट बोला। (आमाल 5:3-4)

ब - रबूबियत अक़ानीम

(1) बाप के बारे में लिखा है कि वो खुदावंद है :-

“उसी घड़ी वो (येसू मसीह) रूह-उल-कुद्दुस से खुशी से भर गया और कहने लगा ए बाप आस्मान और ज़मीन के खुदावंद मैं तेरी हम्द करता हूँ।” (लूका 10:21)

(2) बेटे के बारे में लिखा है कि वो खुदावंद है :-

“जो कलाम उस ने बनी-इसाईल के पास भेजा जबकि येसू मसीह की मार्फत जो सब का खुदावंद है सुलह की खुशखबरी दी।” (आमाल 10:36)

(3) रूह-उल-कुद्दुस के बारे में लिखा है कि वो खुदावंद है :-

“और खुदावंद रूह है और जहां कहीं खुदावंद का रूह है वहां आजादी है।” (2 कुरिन्थियों 3:17)

ज - अज़लियत-ए-अक्रानीम

(1) बाप के बारे में लिखा है कि वो अज़ली है :-

“दानीएल के खुदा के हुज़ूर तरसाँ व लरजाँ हूँ क्योंकि वही जिंदा खुदा है और हमेशा कायम है और उस की सल्तनत लाज़वाल है और उस की ममलकत अबद तक रहेगी।” (दानीएल 6:26)

(2) बेटे के बारे में लिखा है कि वो अज़ली है :-

“खुदावंद खुदा जो है और जो था और जो आने वाला है यानी कादिर मुतलक फ़रमाता है कि मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ।” (मुकाशफ़ा 1:8)

(3) रूह-उल-कुद्दुस के बारे में लिखा है कि वो अज़ली है :-

“तो मसीह का खून जिसने अपने आपको अज़ली रूह के वसीले से खुदा के सामने बेऐब कुर्बान कर दिया तुम्हारे दिलों को मुर्दा कामों से क्यों ना पाक करेगा ताकि जिंदा खुदा की इबादत करें।” (इब्रानियों 9:14)

द - अक्रानीम की हमाजाई

(1) बाप के बारे में लिखा है कि वो हर जगह मौजूद है :-

“सब का खुदा और बाप एक ही है जो सब के ऊपर और सब के दर्मियान और सब के अंदर है।□ (इफिसियों 4:6)

(2) बेटे के बारे में लिखा है कि वो हर जगह मौजूद है :-

“क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इखट्ठे हैं वहां मैं उन के बीच में हूँ।□ (मती 18:20)

(3) रूह-उल-कुदुस के बारे में लिखा है कि वो हर जगह मौजूद है :-

“मैं तेरी रूह से बच कर कहाँ जाऊं या तेरी हुजूरी से किधर भागूं? अगर आस्मान पर चढ़ जाऊं तो तू वहां है। अगर मैं पाताल में बिस्तर बिछाऊं तो देख! तू वहां भी है। अगर मैं सुबह के पर लगा कर समुंद्र की इतिहा में जा बसूं तो वहां भी तेरा हाथ मेरी राहनुमाई करेगा और तेरा दाहिना हाथ मुझे सँभालेगा।□ (जबूर 139:7-10)

ह - सज्दा का इस्तिहक्राक

(1) बाप की बाबत इन्जील यूहन्ना 4:23 में लिखा है कि :-

“मगर वो वक्त आता है कि बल्कि अब ही है कि सच्चे परस्तार बाप की परस्तिश रूह और सच्चाई से करेंगे क्योंकि बाप अपने लिए ऐसे ही परस्तार ढूंढता है।□

(2) बेटे की बाबत फिलिप्पियों 2:10-11 में लिखा है :-

“ताकि येसू के नाम पर हर एक घटना झुके। ख्वाह आसमानियों का हो ख्वाह जमीनियों का। ख्वाह उनका जो ज़मीन के नीचे हैं। और खुदा बाप के जलाल के लिए हर एक ज़बान इकरार करे कि येसू मसीह खुदावंद है।□

(3) रूह-उल-कुदुस ईमानदारों को परस्तिश व इबादत के लिए तैयार करता है :-

“इसी तरह रूह भी हमारी कमजोरी में मदद करता है क्योंकि जिस तौर से हमको दुआ करना चाहिए हम नहीं जानते मगर रूह खुद ऐसी आहें भर भर कर हमारी शफाअत करता है जिनका बयान नहीं हो सकता। (रोमीयों 8:26)

व - सिफ़ते हक़

(1) बाप हक़ है :-

“और हमेशा की ज़िंदगी ये है कि वो तुझ खुदा-ए-वाहिद और बरहक़ को और येसू मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें। (यूहन्ना 17:3)

(2) बेटा हक़ है :-

“येसू ने उस से कहा कि राह और हक़ और ज़िंदगी में हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आता। (यूहन्ना 14:6)

(3) रूह-उल-कुदुस हक़ है :-

“और मैं बाप से दरख्वास्त करूँगा तो वो तुम्हें दूसरा मददगार बख़शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे यानी रूह-ए-हक़ जिसे दुनिया हासिल नहीं कर सकती क्योंकि ना उसे देखती और ना जानती है। तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहता है और तुम्हारे अन्दर होगा।” (यूहन्ना 14:16-17)

ज़ - सिफ़ते मुहब्बत

(1) बाप मुहब्बत है। येसू ने कहा :-

“बाप तो आप ही तुमको अज़ीज़ रखता है क्योंकि तुमने मुझको अज़ीज़ रखा है और ईमान लाए हो कि मैं बाप की तरफ़ से निकला हूँ। (यूहन्ना 16:27)

(2) बेटा मुहब्बत है :-

“जो कुछ मैं तुमको हुक्म देता हूँ अगर तुम उसे करो तो मेरे दोस्त हो। अब से मैं तुम्हें नौकर ना कहूँगा क्योंकि नौकर नहीं जानता कि उस का मालिक क्या करता है बल्कि तुम्हें मैंने दोस्त कहा है। इसलिए कि जो बातें मैंने अपने बाप से सुनीं वो सब तुमको बता दीं।□ (यूहन्ना 14:15,14)

(3) रूह-उल-कुद्दुस मुहब्बत है :-

“क्योंकि खुदा ने हमें दहशत की रूह नहीं बल्कि कुद्रत और मुहब्बत और तर्बीयत की रूह दी है।□ (2 तीमुथियुस 1:7)

ह - कुद्दुसियत

(1) बाप कुद्दूस है। येसू मसीह ने अपनी शिफाअती दुआ में कहा :-

“ऐ कुद्दूस बाप अपने उस नाम के वसीले से जो तू ने मुझे बखशा है उन की हिफाजत कर ताकि वो हमारी तरह एक हों।□ (यूहन्ना 17:11)

(2) बेटा कुद्दूस है :-

“और फ़रिश्ते ने जवाब में उस से कहा कि रूह-उल-कुद्दुस तुझ पर नाज़िल होगा और खुदा तआला की कुद्रत तुझ पर साया डालेगी और इस सबब से वो मौलूद-ए-मुकद्दस खुदा का बेटा कहलाएगा।” (लूका 1:35)

(3) रूह-उल-कुद्दुस कुद्दूस है :-

“और खुदा के पाक रूह को रंजीदा ना करो जिससे तुम पर मखलिसी के दिन के लिए मुहर हुई।□ (इफिसियों 4:30)

10- एतराजात

अलिफ़ - मसीह की उलूहियत पर एतराज़

शायद कोई मसीह की उलूहियत पर एतराज करे और ताईद में मसीह का ये कौल पेश कर दे कि “मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता.... क्योंकि मैं अपनी मर्जी नहीं बल्कि अपने भेजने वाले की मर्जी चाहता हूँ।” (यूहन्ना 5:30), या फिर ये कौल बयान करे “बाप मुझसे बड़ा है।” (यूहन्ना 14:28)

इस एतराज पर हम ये कहेंगे कि ये बयानात तस्लीस-फील-तौहीद में बाप की तरफ से निस्बत होने के एतबार से मसीह की उलूहियत की नफी नहीं करते, क्योंकि इंसान के फिदीए और मखलिसी के लिए ये लाजिम था कि खुदावंद तआला का उकनूम सानी जसद इंसानी इख्तियार कर ले और अपने आपको कफ़ारे में पेश कर के इलाही मर्जी पूरी कर दे।

जब इस इलाही काम को मसीह ने मुकम्मल कर लिया तो आस्मान पर सऊद किया और खुदा के दहने हाथ आला तरीन अजमत के साथ बैठ गया “और हर तरह की हुकूमत और इख्तियार और कुद्रत और रियासत और हर एक नाम से बहुत बुलंद किया जो ना सिर्फ इस जहान में बल्कि आने वाले जहान में भी लिया जाएगा। और सब कुछ उस के पाओं तले कर दिया और उस को सब चीजों का सरदार बना कर कलीसिया को दे दिया। ये उस का बदन है और उसी की मामूरी जो हर तरह से सब का मामूर करने वाला है।” (इफिसियों 1:21-23)

रसूलों की तालीम हम पर वाजेह कर देती है कि मखलिसी के काम के लिए नजातदिहंदा को एक बशर (इंसान) होना लाजिमी था ताकि वो उन की तबीयत व फित्रत में हिस्सेदार और शरीक बन सके जिनको बचाने के लिए आया था। ये भी जरूरी था कि वो खुदा भी होता कि इक़तिदार-ए-आला का हामिल हो, गुनाह पर उस का ग़लबा हो और जो ईमान लाएं इन सबको गुनाह की गिरिफ्त व इख्तियार से आज़ाद कर दे।

किताब-ए-मुकद्दस का मुतालआ करने वालों को इस की सुतूर में पैदाईश की किताब से मुकाशफ़ा की किताब तक मुनज्जी का अक्स नज़र आता है। कभी तो वो एक इंसान की शक़ल में नज़र आता है “जो औरत से पैदा हुआ और शरीअत के मातहत पैदा हुआ ताकि शरीअत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ा ले और हमको लेपालक होने का दर्जा मिले।” (ग़लतीयों 4:4) और कभी वो खुदा-ए-बुजुर्ग व बरतर की सूरत में नज़र आता है ताकि आबिदों का मरकज़-ए-ईमान और नुक्ता इबादत बन जाये।

मसीह की शख्सियत हैरत-अंगेज है जो अल्लाह भी है और इंसान भी है जिसने कबल तजसद (जिस्म के साथ) अम्बिया किराम की रोयतों को हर दौर में मामूरी बखशी। यसअयाह नबी ने उन के खुदा की अजीमतीन निशानी के तौर पर तजसद (जिस्म) इख्तियार करने की बशारत दी “खुदावंद आप तुमको एक निशान बखशेगा। देखो एक कुंवारी हामिला होगी और बेटा पैदा होगा और वो उस का नाम इम्मानुएल (खुदा हमारे साथ) रखेगी।” (यसअयाह 7:14, मती 1:22-23 (यसअयाह नबी ने मसीह के बारे में ये भी बयान किया “उसका नाम अजीब मुशीर खुदा-ए-क्रादिर अबदीयत का बाप सलामती का शाहजादा होगा।” (यसअयाह 9:6 (

ब - रूह-उल-कुद्दुस की उलूहियत पर एतराज़

कुछ लोग कहते हैं कि रूह-उल-कुद्दुस तस्लीस-फील-तौहीद का उकनूम नहीं है बल्कि वो खुदा की कुव्वत व कुद्रत है जो कायनात में सरगर्म अमल और कुलूब इंसानी में तासीर करती रहती है। लेकिन किताब-ए-मुकद्दस के मतन और नुसूस से ये अयाँ है कि रूह-उल-कुद्दुस भी एक उकनूम है, वो महज़ खुदा की कुव्वत फ़आला ही नहीं है जो हम में काम करती रहती है बल्कि उस में शख्सियत है। महज़ कुव्वत को पाकीज़गी सच्चाई, हिकमत या इरादे की हामिल नहीं कहा जा सकता, और ना ही वो मुतकल्लिम हो सकती है और ना ही उस से कलाम किया जा सकता है।

किताब-ए-मुकद्दस बाइबिल में मर्कूम है कि मसीह के बपतिस्मे के वक़्त रूह-उल-कुद्दुस जिस्मानी सूरत में कबूतर की मानिंद उन पर नाज़िल हुआ और आस्मान से एक आवाज़ आई “तू मेरा प्यारा बेटा है। तुझसे मैं खुश हूँ।” (लूका 3:22) ये बात भी तीन अकानीम के वजूद पर दलालत करती है कि बाप ने आस्मान से कलाम किया, रूह-उल-कुद्दुस आस्मान से बेटे पर जो ज़मीन पर था नाज़िल हुआ।

इसी तरह मसीह ने अपने शागिर्दों को मददगार यानी रूहे हक़ जो बाप से सादिर होता है भेजने का वाअदा किया। (यूहन्ना 15:26) रसूलों के कलिमात बरकात भी इसी कबील से ताल्लुक रखते हैं, यानी “खुदावंद येसू मसीह का फ़ज़ल खुदा की मुहब्बत और रूह-उल-कुद्दुस की शराकत तुम सब के साथ होती रहे।” 2) कुरिन्थियों 14:13 (और पौलुस

रसूल के ऐलान “उसी के वसीले से हम दोनों की एक ही रूह में बाप के पास रसाई होती है।” (इफिसियों 2:18) का ताल्लुक भी इसी बात से है।

रूह-उल-कुद्दुस के कुव्वते इलाहिया के दाअवे की अदम सदाकत किताब-ए-मुकद्दस के हर करारी पर अयाँ है। ऐसा ही एक हवाला 1 कुरिन्थियों 12:4-11 है जिसमें पौलुस रसूल का ये बयान मिलता है कि रूह-उल-कुद्दुस के वसीले कलीसिया को कई नेअमतेँ दी गईं, जिनमें से एक मोअजिजा करने की नेअमत है। अगर रूह-उल-कुद्दुस महज एक कुव्वत है तो इस का ये मतलब हुआ कि रूह महज नेअमतों में से एक नेअमत है।

इस के इलावा और भी कई हवालेजात हैं जहां रूह-उल-कुद्दुस एक शख्सियत नजर आती है ना कि महज एक कुव्वत या नेअमत। देखिए :-

“फिर येसू रूह की कुव्वत से भरा हुआ गलील को लौटा।□ (लूका 4:14)

“खुदा ने येसू नासरी को रूह-उल-कुद्दुस और कुद्रत से किस तरह मसह किया।□ (आमाल 10:38)

“ताकि रूह-उल-कुद्दुस की कुद्रत से तुम्हारी उम्मीद ज्यादा होती जाये।□ (रोमीयों 15:13)

“निशानों और मोअजिजों की ताकत से और रूह-उल-कुद्दुस की कुद्रत से।□ (रोमीयों 15:18)

अब अगर मोअतरिज का खयाल (यानी ये कि रूह-उल-कुद्दुस खुदा की एक कुव्वत का नाम है) सही माना जाये तो इन आयात की तफ्सीर यूं होगी कि “येसू कुव्वत की कुव्वत से भरा हुआ” या “कुद्दूस कुव्वत की कुव्वत” से वगैरह-वगैरह। क्या इस तरह की तफ्सीर कोई शख्स पसंद करेगा?

ज - तस्लीस-फ़ील-तौहीद के अक्रीदे पर एतराज

अक्सर ये एतराज किया जाता है कि “खुदा-ए-वाहिद की ज्ञात में तीन अकानीम या शख्सियात हैं। इस पर तुम्हारी क्या दलील है?□

जवाब में हम कहेंगे कि खुदा की वहदानियत तो किताब-ए-मुकद्दस में सुनहरी लफ़्जों में बड़े उजले तौर पर नज़र आती ही है, लेकिन ये इक्रार कर लेना कि खुदावंद तआला जैसा कोई और है ही नहीं इस बात से नहीं रोकता कि जोहर वाहिद में तीन शख़िसयात हों।

आईए किताब-ए-मुकद्दस को ही हक़म बनाएँ और इसी के नुसूस व मतन से इस्तिदलाल पकड़ें। अहदे-अतीक़ में खुदा के लिए इस्तिमाल होने वाला इज़हार अक्सर जमा के सीगे में आया है “ईलोहीम□ और इसके लिए इस्म ज़मीर “हम” इस्तिमाल हुआ है। ऐसा अहम तरीन हवाला इस्तिस्ना 6:4 में आया है “सुन ऐ इस्राईल खुदावंद हमारा खुदा (ईलोहीम) एक ही खुदावंद है।□

इस आयत में क़सद तो ये है कि वहदानियत की तालीम दी जाये और उस का बयान हो लेकिन खुदा जमा में आया है यानी ईलोह की जमा “ईलोहीम।□ और भी बहुत सी आयात हैं जहां खुदा का नाम आया है। मसलन :-

“फिर खुदा ने कहा कि हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शबिया की मानिंद बनाएँ।□ (पैदाईश 1:26)

“और खुदावंद खुदा ने कहा, देखो इंसान नेक व बद की पहचान में हम में से एक की मानिंद हो गया।□ (पैदाईश 3:22)

“आओ हम वहां जा कर उन की ज़बान में इख़्तिलाफ़ डालें।□ (पैदाईश 11:7)

“में किस को भेजूँ और हमारी तरफ़ से कौन जाएगा।” (यसअयाह 6:8)

कोई शख़्स इस मौक़े पर ये कह सकता है कि खुदा का मक़सद यहां खुद को साहिबे ताज़ीम व जलालत के तौर पर पेश करना है जैसा कि बादशाह लोग किया करते हैं और अपने लिए जमा का सीगा इस्तिमाल करते हैं, लेकिन पैदाईश 3:22 में जो अल्फ़ाज़ खुदा ने कहे “इंसान नेक व बद की पहचान में हम में से एक की मानिंद हो गया।” इस एतराज़ को रद्द करते हैं, क्योंकि ये बयान मुखातिब करने वाले और सामेअ (सुनने वाले) के वजूद की निशानदेही करता है।

अगरचे तस्लीस-फील-तौहीद का भेद हमारी समझ से बाहर है, लेकिन इस को महज़ इसलिए रद्द कर देना कि ये हमारी महदूद समझ में नहीं आ रहा, सही नहीं है।

बहुत से इलाही ऐलानात और मज़ाहिर व ज़हूरत हैं जिनका कमा-हक्का इदराक हमारी इस्तिताअत व इस्तिदाद (सलाहियत) से बाहर है। मसलन बारी तआला का वजूद बिलज़ात, उस का अज़ली वजूद, उस का हर शैय के लिए इल्लत औला होना, साथ ही साथ अज़ल से अबद तक और सारे ज़मानों में उस की हमाजाई (हाज़िर नाज़िर) और हमा दान (आलिमुल गैब) होने की ख़ूबी।

हम ये पहले ही कह आए हैं कि तस्लीस-फील-तौहीद की बात गो हमारी समझ और इदराक से मावरा है, फिर भी वहदानियत के मुनाफ़ी (खिलाफ) नहीं है और ना इस में कोई ऐसी बात है कि हम इस के रद्द करने पर मजबूर हों, ना इस में कोई ऐसी बात है जो हमारे दीन व ईमान को मुहाल बनाती है क्योंकि इस में तीन खुदाओं का वजूद हरगिज़ मुराद नहीं है।

ये भी पूछा जा सकता है कि अक़ीदा तस्लीस-फील-तौहीद मसीही मज़हब में क्या कोई खास फ़ायदा देता है?

हाँ इस का फ़ायदा ये है कि हम इस को असास बना कर दीगर अहम इलाही तालीमात की तौज़ीह कर सकते हैं। मसलन :-

(1) अक़ीदा तस्लीस-फील-तौहीद शाने उलूहियत को बुलंद करता और इलाही कमालात की वज़ाहत करता है। तस्लीस-फील-तौहीद के बग़ैर वहदानियत इलाही शान व कमालात को महदूद कर देती है और ज़ाते बारी को सआदत व मुहब्बत के हर पहलू से महरूम रखती है। हम तस्लीस-फील-तौहीद के अक़ानीम में बाहमी मुहब्बत पाते हैं और मुहब्बत उस की उलूहियत को हर तरह की अज़ली खुशी और सआदत के तमाम मुकतज़ियात से मामूर रखती है।

(2) तस्लीस-फील-तौहीद एक ऐसा ज़रीया है जिससे खुदा खुद को अपनी मख़लूकात पर ज़ाहिर करता है।

बाप, बेटा और रूह-उल-कुद्दुस हर एक का एक ही जोहर है। बेटा ही बाप के बारे में मार्फत ताम्मा रखता है और वही उसे जाहिर करता है। रूह-उल-कुद्दुस बनी-नूअ इंसान को उलूहियत से मुतआरिफ़ कराता और जाहिर करता है।

अपने तीन अक़ानीम के ज़रीये खुदा अपनी मख़लूक़ात के नज़दीक़ आता है। लेकिन इस के बग़ैर वो हमसे दूर रह जाता, और हमारी अक़ल व समझ पर पर्दा पड़ जाता और हमारे तजुर्बात मुनक़तेअ हो जाते।

(3) तस्लीस-फ़ील-तौहीद वो ज़रीया है जिससे नजात के कुल तकाज़े पूरे हुए। उक़नूम सानी ने जिस्म इख़्तियार किया और हमारे गुनाहों का कफ़ारा दिया। वो हमारे लिए दर्मियानी बन गया और नजात, सुलह, मुसालहत और रास्तबाज़ी का वसीला मुहय्या किया। पौलुस रसूल ने कहा “खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तक़सीरों को उन के जिम्मे ना लगाया और उस ने मेल मिलाप का पैग़ाम हमें सौंप दिया है।” (2 कुरिन्थियों 5:19)

उक़नूम सालिस के अमल के बारे में ये तालीम मिलती है कि वो हमारे दिलों को नया बना देता है, और हमारी अक़लों को रोशन करता है और खुदा के हुज़ूर हाज़िर होने के लायक़ बनाने के लिए हमारी तक़दीस करता है। सच तो ये है कि तस्लीस-फ़ील-तौहीद के बग़ैर खुदा को मुनज्जी और फ़िया देने वाला, तक़दीस करने वाला और मुंसिफ़ कहना सही ना होगा, क्योंकि गुनाहों की वजह से शरीअत की जो लानत इंसान पर पड़ती है उस से छुटकारा दिलाने के लिए वो गुनाहगारों की ज़रूरत को पूरा करता है।

(4) तस्लीस-फ़ील-तौहीद खुदा तआला को इंसानी जिंदगी में एक मिसाल व नमूने की हैसियत से पेश करती है। ख़ानदानी हम-आहंगी और समाजी मुहब्बत में हम उक़नूम अद्वल में पद्रीयत की सही और सच्ची सिफ़त देखते हैं, और उक़नूम सानी में इब्नियत की हक़ीकी सिफ़त देखते हैं। ये इंसान में तसद्वुर पद्रीयत और फ़र्जन्दियत को मिस्ल आला के तौर पर पेश करती है।

अगर बिलफ़र्ज उलूहियत खुदावंदी में से तमाम एहसास-ए-मुहब्बत को उस से मुनज़्जह कर दें तो खुदा सिर्फ़ एक सख़्त व जाबिर खुदा बन कर रह जाएगा, जिसकी

सख्ती व जबर हमें रोज बरोज उस से दूर करती जाएगी हत्ता कि हम उस से जुदा हो कर रह जाएंगे।

सवालात

अजीज कारी, अब जबकि आपने इस किताब का ध्यान से मुतालआ किया है तो हम आपको दावत देते हैं कि आप जेल में दिए गए सवालात के जवाबात देकर अपने इल्म का जायजा लें :-

1. वो कौन-कौन सी बातें हैं जिनमें मसीह की शख्सियत के बारे में इस्लाम व मसीहियत हम-खयाल नजर आते हैं?
2. वो कौन से अस्बाब हैं जिन्होंने ने मुसलमानों को मसीहियत की तस्लीस की तालीम को रद्द करने पर आमादा किया है?
3. आपकी राय में मुस्लिम हजरात क्या अपने इस कौल की ताईद में काफ़ी दलील रखते हैं कि इन्जील मुहर्रिफ़ है क्योंकि वो आँहजरत को नबी की हैसियत से पेश नहीं करती?
4. कुरआन में मसीह की कौन-कौन सी मुम्ताज़ खुसूसियात हैं?
5. वो कौन सा मोअजिज़ा है जिसे इस्लाम ने मसीह से मन्सूब तो किया है लेकिन इन्जील इस बारे में खामोश है?
6. कुरआन के मतन में क्या कोई शख्स मसीह की उलूहियत की झलक देख सकता है?
7. आपकी राय में वो कौन से अस्बाब हैं जिन्होंने ने इस्लाम को इस बात पर आमादा किया है कि वो खुदा की पद्रीयत का इन्कार करता है?
8. मसीह की उलूहियत के बारे में इस्लाम ने किया नताइज अखज़ किए हैं?
9. मसीह की तालीम के इन्कार में इमाम राज़ी ने जो कहा है उस का आप किस तरह जवाब दे सकते हैं?
10. इस्लाम के इस बयान की कि मसीह सिर्फ़ एक बन्दे थे, आप किस तरह तर्दीद करेंगे?
11. किताब-ए-मुकद्दस से मसीह की उलूहियत की दलील मुख्तसरन पेश कीजिए।

12. क्या मसीह ने खुदा की जात से अपना ताल्लुक इन्जील में बयान किया है? हवाले दीजिए।
13. पुराने अहदनामा के नबियों और नए अहदनामे के रसूलों ने मसीह की उलूहियत पर क्या दलीलें दी हैं?
14. क्या मसीह ने उसी तरह अपनी ताज़ीम का हुक्म दिया है जिस तरह बाप की ताज़ीम का?
15. गिनास्तियों ने और अरुईस के मानने वालों ने शख्सियत मसीह का जो इन्कार पेश किया है उस की आप किस तरह तख्सीस करेंगे?
16. क्या कोई ऐसा ज़बूर भी है जिसमें मसीह की उलूहियत नज़र आती है?
17. आप इस सच्चाई को शख्सी तौर पर किस तरह बयान करेंगे कि खुदा तस्लीस-फ़ील-तौहीद है?
18. आप उन लोगों को क्या जवाब देंगे जो तस्लीस-फ़ील-तौहीद का मतलब तीन खुदा लेते हैं?
19. क्या तस्लीस-फ़ील-तौहीद की बुनियाद कुतुब मुकद्दसा में है?
20. किताब-ए-मुकद्दस की कोई ऐसी इबारात पेश कीजिए जो तस्लीस-फ़ील-तौहीद की बेनज़ीरी दिखाती हो?

The Good Way

P.O.Box 66

CH - 8486

Ri kon

Switzerland